शुभाशंसा

शहरी स्थानीय निकायों के लिए इस "शहरी पशु प्रबंधन" पर आधारित हस्त-पुस्तिका को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह प्रकाशन उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में पशु प्रबंधन पद्धतियों को आधुनिक और मानकीकृत बनाने के हमारे सतत प्रयासों का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

उत्तर प्रदेश, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और तेजी से विकसित होते शहरी क्षेत्रों के लिए जाना जाता है, हमारे शहरवासियों और पशुओं के बीच जटिल संबंधों के प्रबंधन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पथाश्रित पशुओं की देखभाल सुनिश्चित करने से लेकर डेयरी संचालन को नियमित करने, वैज्ञानिक जन्म नियंत्रण कार्यक्रमों को लागू करने से लेकर पशुजन्य रोगों की रोकथाम तक – हमारी शहरी स्थानीय निकायों पर ऐसी अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य और पशु कल्याण को सीधे प्रभावित करती हैं।

यह वृहत पुस्तिका विभिन्न कानूनों, विनियमों और सर्वोत्तम प्रथाओं को एक ही प्रमाणिक संदर्भ में समेकित करती है और हमारे राज्य सरकार के वैज्ञानिक तरीकों के माध्यम से शहरी पशु प्रबंधन को आधुनिक बनाने तथा पशुओं के प्रति करुणा की हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को बनाए रखने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

गत वर्षों में शहरी पशु प्रबंधन में कई क्रांतिकारी कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं - यथा निराश्रित श्वानों के लिए वैज्ञानिक जन्म नियंत्रण कार्यक्रम, राज्यव्यापी गौशालाओं की स्थापना, रेबीज उन्मूलन अभियान और पशुजन्य रोगों की रोकथाम आदि। इन सभी नवाचारों की सफलता एवं इनका कुशलतापूर्वक कार्यान्वयन हमारी शहरी स्थानीय निकायों की तत्परता पर निर्भर है। यह पुस्तिका इन नवाचारों के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक ढांचा और दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

मैं सभी शहरी स्थानीय निकाय अधिकारियों से यह अपेक्षा करता हूं कि वे पशु प्रबंधन के मामलों में इस पुस्तिका को अपने प्राथमिक संदर्भ के रूप में उपयोग करें। आपकी भूमिका हमारे शहरों को कुशल और मानवीय पशु प्रबंधन के मॉडल को बदलने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आइए, हम सभी मिलकर ऐसे नगरों का निर्माण करें, जहां प्रगति और करुणा साथ-साथ चलें, और पूरे देश के लिए एक नया मानक स्थापित करें।

(ए०के० शर्मा)
मंत्री
नगर विकास विभाग, शहरी समग्र विकास,
नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन विभाग,
उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के नगर निकायों हेतु पशु प्रबंधन मैनुअल

परामर्शी मार्ग-निर्देशिका 2024



नगर विकास विभाग
उत्तर प्रदेश शासन

प्रस्तावना

यह व्यापक पुस्तिका उत्तर प्रदेश राज्य के सभी स्थानीय निकायों के लिए एक तैयार संदर्भ के रूप में तैयार की गई है, जो उनके संबंधित अधिकार क्षेत्र में पशु प्रबंधन से संबंधित उनके वैधानिक दायित्वों और जिम्मेदारियों के अनुसार है। पुस्तिका में निम्नलिखित महत्वपूर्ण क्षेत्रों को शामिल किया गया है, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं है:

1. वैज्ञानिक रूप से अनुमोदित पशु जन्म नियंत्रण (A.B.C) कार्यक्रमों के माध्यम से पशु जनसंख्या प्रबंधन।
2. पशुजन्य रोगों और संभावित खतरनाक जानवरों का शमन और प्रबंधन।
3. पशु-संबंधी परिसरों का लाइसेंसिंग और विनियमन।
4. बूचड़खानों की निगरानी और विनियमन।
5. पालतू पशु पंजीकरण प्रणाली का कार्यान्वयन।
6. पशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और क्रूरता की रोकथाम।
7. सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय और पशुजन्य रोग नियंत्रण प्रोटोकॉल।
8. सार्वजनिक सुरक्षा और उपद्रव निवारण सुनिश्चित करना।
9. उचित कराधान उपायों के माध्यम से राजस्व सृजन।
10. मवेशी संरक्षण।
11. रेबीज़ शमन।

विषयसूची

परिचय	पृष्ट
पशु जन्म नियंत्रण और जनसंख्या प्रबंधन	3
पशु वध एवं बूचड़खाना विनियम	10
नगरपालिका बाज़ारों और पशु बाज़ारों का प्रबंधन और नियंत्रण	16
पालतू पशु	27
केस प्रॉपर्टी पशुओं का देखभाल और रखरखाव	31
मवेशी पाउंड और पिंजरा पोल	34
पशुओं को प्रभावित करने वाले संक्रामक और संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण	36
कराधान	40
सार्वजनिक स्वास्थ्य और उपद्रव नियंत्रण	42
डेयरी, भारवाहक पशु और मवेशी	45
रेबीज़ उन्मूलन	53
अनुलग्नक-ए- परियोजना मान्यता के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाला फॉर्म।	56
अनुलग्नक-बी- परियोजना नवीकरण के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाला फॉर्म।	62
अनुलग्नक-सी - लाइसेंस के लिए निर्धारित प्रपत्र।	65

परिचय

उत्तर प्रदेश में शहरी स्थानीय निकायों को अपने अधिकार क्षेत्र में विविध पशु आबादी के प्रबंधन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसमें पालतू जानवर, पशुधन और वन्यजीव शामिल हैं जो शहरी वातावरण में एक साथ रहते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य को बनाए रखने, सामुदायिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और पशु कल्याण मानकों को बनाए रखने के लिए प्रभावी पशु प्रबंधन आवश्यक है।

कानूनी ढांचा:

उत्तर प्रदेश में शहरी स्थानीय निकायों की पशु प्रबंधन कार्य और वैधानिक कर्तव्य एक व्यापक कानूनी ढांचे द्वारा शासित होते हैं, जिसमें नीचे उल्लिखित विभिन्न कानून शामिल हैं:

1. भारत का संविधान
2. पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 और उसके अंतर्गत प्रख्यापित नियम
3. उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959
4. पशुओं में संक्रामक और संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम, 2009
5. खाद्य सुरक्षा और मानक (खाद्य व्यवसाय का लाइसेंस और पंजीकरण), विनियम 2011
6. डेयरी फार्मों और गौशालाओं के पर्यावरण प्रबंधन के लिए C.P.C.B. के दिशानिर्देश
7. प्रासंगिक सरकारी आदेश

पुस्तिका में कुछ प्रासंगिक निर्णय और फैसले भी शामिल हैं, जो पशु प्रबंधन प्रयासों में शहरी स्थानीय निकायों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

कुछ विशेष महत्व निर्णय निम्नवत हैं:

राज्य बूचड़खाना देखरेख समिति (State Slaughterhouse Monitoring Committees के गठन (लक्ष्मी नारायण मोदी बनाम भारत सरकार, 2012) और बूचड़खानों के लिए वैधानिक आवश्यकताओं के पालन (कॉमन कॉज बनाम भारत सरकार, 2017) पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों ने बूचड़खानों एवं मांस प्रसंस्करण प्रतिष्ठानों केलिएनएमानकतयकिएहैं। बूचड़खानों (गौरी मौलेखी बनाम पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, 2022) और डेयरियों (नुग्गेहल्ली जयसिम्हा बनाम दिल्ली सरकार, 2023) के लिए पर्यावरणीय विचारों पर राष्ट्रीय हरित अधिकरण का जोर पशु प्रबंधन के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
इसके साथ ही (रघुरामशर्मा एवं अन्य बनाम सी. तुलसी एवं अन्य, 2020; मेहर बानू बेगम बनाम असम राज्य, 2022) और निराश्रित श्वानों के प्रबंधन (एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया बनाम पीपुल फॉर एलिमिनेशन ऑफ स्ट्रे ट्रबल एंड अन्य 2015) पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों ने पशुओं के साथ मानवीय व्यवहार और शहरी स्थानीय निकायों के कानूनी दायित्वों पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है।

इस पुस्तिका का उद्देश्य स्थानीय निकायों को इन जटिल मुद्दों को प्रभावी ढंग से हल करने में मदद करना है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को पशु कल्याण संबंधी विचारों के साथ संतुलित किया जा सके। शहरी पशु प्रबंधन के व्यावहारिक और कानूनी दोनों पहलुओं की व्यापक समझ प्रदान करके, यह संसाधन स्थानीय निकायों को अधिक प्रभावी, मानवीय और कानूनी रूप से अनुपालन करने वाली पशु प्रबंधन रणनीतियों को विकसित करने और लागू करने में सक्षम बनाएगा।

शहरी स्थानीय निकायों में पशु प्रबंधन के लिए संवैधानिक ढांचा

शहरी स्थानीय निकायों के लिए, बारहवीं अनुसूची (अनुच्छेद 243W) बूचड़खानों और चमड़े के कारखानों को विनियमित करने, मवेशी बाड़े स्थापित करने और पशुओं के प्रति क्रूरता को रोकने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता संरक्षण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए प्रावधान करने का अधिकार प्रदान करती है।



पशु जन्म नियंत्रण और जनसंख्या प्रबंधन

निराश्रित श्वानों को मारना या विस्थापित करना, यानी निराश्रित श्वानोंकोएकजगहसेउठाकर किसी दूसरी जगह छोड़ना गैरकानूनी और अस्वीकृत है। सभी शहरी स्थानीय निकायों का यह कर्तव्य है कि वे केवल पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023 का पालन करें और निराश्रित श्वानों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए A.B.C/एबीसी के अलावा किसी अन्य तरीके का सहारा न लें। सभी शहरी स्थानीय निकायों का यह भी कर्तव्य है कि वे निराश्रित श्वानों के लिए एबीसी कार्यक्रमों के लिए बुनियादी ढाँचा उपलब्ध कराएँ।

शहरी स्थानीय निकायों के प्रमुख कानूनी दायित्व नीचे दिए गए हैं:



पशु जन्म नियंत्रण और जनसंख्या प्रबंधन

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
नियम 3, 10, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	ABC कार्यक्रम कार्यान्वयन विकल्प	स्थानीय निकाय प्रासंगिक विशेषज्ञता वाले और भारतीय पशु कल्याण बोर्ड (AWBI) द्वारा विधिवत मान्यता प्राप्त पशु कल्याण संस्था (AWO) की सेवाएं ले सकते हैं। [नियम 3(1)] स्थानीय निकायों अपने पशु चिकित्सा अधिकारियों [नियम 3(1)] या संविदा कर्मचारियों के साथ विशेष प्रयोजन माध्यम साधन/ संस्था (एसपीवी) के माध्यम से भी एबीसी कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। [नियम 10(5)] स्थानीय निकायों द्वारा अपने पशु चिकित्सा अधिकारी के माध्यम से अथवा एसपीवी के माध्यम से AWBI को सूचित करके एबीसी कार्यक्रम आयोजित करना। [नियम 3(6)]	परियोजना मान्यता के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाले फॉर्म के लिए अनुलग्नक-ए देखें।
नियम 3, 5 और 6, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	अनिवार्य परियोजना मान्यता	एसपीवी या निकायों के पशु चिकित्सा अधिकारियों के माध्यम से कार्यक्रम संचालित करने वाले स्थानीय निकायों को एबीसी कार्यक्रम संचालित करने के लिए AWBI से परियोजना मान्यता का अनिवार्य प्रमाण पत्र प्राप्त करना होगा। स्थानीय निकायों को यह भी सत्यापित करना होगा कि उनके द्वारा नियुक्त AWO को AWBI द्वारा मान्यता प्राप्त है और उन्होंने बोर्ड से परियोजना मान्यता का आवश्यक प्रमाण पत्र प्राप्त किया है। [नियम 3(2)] AWBI से परियोजना मान्यता प्राप्त किए बिना कोई भी एबीसी कार्यक्रम नहीं चलाया जाएगा। [नियम 5]	परियोजना नवीकरण के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाले फॉर्म के लिए अनुलग्नक-बी देखें। सफल होने पर, एक नया प्रमाणपत्र जारी किया जाता है, जिसकी वैधता अगले तीन वर्षों के लिए बढ़ा दी जाती है।

		प्रमाण पत्र को एबीसी केंद्र पर प्रदर्शित करना एवं निरीक्षण के लिए उपलब्ध कराया जाना अनिवार्य होगा। [नियम 3(14)] परियोजना मान्यता प्रमाणपत्र 3 वर्षों के लिए वैध होता है और इसे 5000 रुपये के नवीकरण शुल्क के साथ समाप्ति से कम से कम 60 दिन पहले AWBI को आवेदन करके नवीनीकृत किया जाना अनिवार्य है। [नियम 6]	
नियम 10, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	स्थानीय निकायों के दायित्व	स्थानीय निकायों को यह सुनिश्चित करना होगा: एबीसी केंद्रों पर पर्याप्त सुविधाएं: केनेल, वैन, सर्जिकल बुनियादी ढांचा, भस्मक, सीसीटीवी, स्वच्छता, रिकॉर्ड-कीपिंग आदि। [नियम 10 (1)] AWO कार्यकर्ताओं को नियमित रूप से व्यय की प्रतिपूर्ति। [नियम 10(2)] मासिक मूल्यांकन के लिए स्थानीय एबीसी निगरानी समिति का गठन। [नियम 10(3)] एबीसी केंद्रों के खिलाफ शिकायतों की जांच करें और स्थानीय पशु जन्म नियंत्रण निगरानी समिति (स्थानीय एबीसी निगरानी समिति) या AWBI की सिफारिशों के आधार पर कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ जुड़ाव को समाप्त या निलंबित कर दें। [नियम 10(4)] एस.पी.वी. स्टाफ (पशु चिकित्सक, संचालक आदि) को नियुक्त कर सकता है तथा परियोजना को उपठेके पर नहीं दे सकता। [नियम 10(6)] स्थानीय निकायों को यह सुनिश्चित करना होगा कि एसपीवी स्टाफ को उचित प्रशिक्षण दिया गया है। स्थानीय निकायों द्वारा नियुक्त परियोजना प्रभारी एसपीवी का हिस्सा नहीं होना चाहिए। [नियम 10(7)]	

नियम 11, एबीसी नियम 2023	श्वानों को पकड़ना और उससे जुड़े उद्देश्य	सामान्य जनसंख्या नियंत्रण के लिए एबीसी कार्यक्रम चलाने के लिए स्थानीय निकाय निराश्रित श्वानों को पकड़ेंगे। [नियम 11(1)(ए)] शहरी स्थानीय निकाय निराश्रित श्वानों के काटने की शिकायतें प्राप्त करने के लिए पशु शिकायत हेल्पलाइन स्थापित करेंगे। स्थानीय एबीसी निगरानी समिति के परामर्श पर, शहरी स्थानीय निकाय उन निराश्रित श्वानों को पकड़ सकते हैं जिनके बारे में शिकायत की गई है। [नियम 11(1)(बी)]	शिकायतों के विषय बनने वाले निराश्रित श्वानों को पकड़ना, निरीक्षण करना, उपचारित करना और छोड़ना एबीसी नियम 2023 के नियम 16 का पालन करना अनिवार्य है ।
नियम 11, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	कुत्तों को पकड़ने, नसबंदी, टीकाकरण और छोड़ने पर दिशानिर्देश	निराश्रित श्वानों को पकड़ने वाली टीम के सदस्यों को वैध आईडी कार्ड जारी करें। [नियम 11(2)] निराश्रित श्वानों को पकड़ने से पहले सार्वजनिक नोटिस लगाएं [नियम 11(3)] मानवीय तरीके से पकड़ने के तरीके सुनिश्चित करें। [नियम 11(5)] एबीसी सेंटर में पर्याप्त आवास उपलब्ध कराएं। [नियम 11(6)] उचित केनेलिंग, शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं, ऑपरेशन के बाद की देखभाल सुनिश्चित करें। [नियम 11(10-18)] निराश्रित श्वानों को उसी क्षेत्र में छोड़ा जाए जहां से उन्हें पकड़ा गया था। [नियम 11(19)] AWBI मॉड्यूल में दिए गए मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करें। [नियम 11(20)]	
नियम 12, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	अभिलेखों का रखरखाव	स्थानीय निकाय द्वारा चलाए जा रहे एबीसी कार्यक्रम के परियोजना प्रभारी को निम्नलिखित का विस्तृत रिकॉर्ड रखना होगा:-	पकड़े गए/उपचारित पशुओं के रिकार्ड में निम्नलिखित शामिल होंगे:

		पकड़े गए/उपचारित जानवर खिलाना इलाज दवाइयां और टीके मृत्यु दर उपकरण डॉग वैन लॉगबुक स्टाफ उपस्थिति अंग निरीक्षण सीसीटीवी फुटेज	i उस क्षेत्र या इलाके का नाम जहां से श्वान को पकड़ा गया था; ii पकड़ने की तिथि और समय; पकड़ने के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों के नाम ; पकड़े गए श्वानों के बारे में विवरण - टैग नंबर, नर, मादा की संख्या, रंग, पहचान चिह्न और अनुमानित आयु; v रिहाई की तारीख और समय; तथा vi) उस क्षेत्र/इलाके का नाम जहां श्वान को छोड़ा गया था।
नियम 13, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	रिपोर्टिंग आवश्यकताएँ-	स्थानीय निकायों द्वारा किए जा रहे एबीसी कार्यक्रम के परियोजना प्रभारी को स्थानीय एबीसी निगरानी समिति को मासिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। [नियम 13(i)] राज्य पशु जन्म नियंत्रण कार्यान्वयन एवं निगरानी समिति (राज्य एबीसी निगरानी समिति) के माध्यम से AWBI को वार्षिक रिपोर्ट 31 मई तक प्रस्तुत करें। [नियम 13(ii)] AWBI या राज्य बोर्ड द्वारा अपेक्षित कोई अन्य जानकारी प्रस्तुत करें। [नियम 13(iii)]	
नियम 15, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	असाध्य रूप से बीमार और घातक रूप से घायल निराश्रित श्वानों की दयामृत्यु	स्थानीय एबीसी निगरानी समिति क्षेत्राधिकार वाले पशु चिकित्सा अधिकारी, परियोजना प्रभारी और AWBI या राज्य पशु कल्याण बोर्ड (राज्य बोर्ड) के प्रतिनिधि से मिलकर टीम नियुक्त करेगी, जो असाध्य रूप से बीमार/घायल श्वानों का निदान करेगी। [नियम 15(1)]	असाध्य रूप से बीमार या घातक रूप से घायल श्वानों को केवल योग्य पशुचिकित्सक द्वारा मानवीय तरीके से ही दयामृत्यु दी जाएगी तथा दयामृत्यु का कारण सहित रिकार्ड रखा जाएगा। किसी भी पशु को किसी अन्य पशु के सामने दयामृत्यु नहीं दी जा सकती।

नियम 16, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	कुत्तों के काटने और Rabid श्वानों से संबंधित शिकायतों का समाधान।	स्थानीय निकायों को: शिकायतों के लिए पशु हेल्पलाइन स्थापित करें। [नियम 16]। परियोजना प्रभारी या पशु कल्याण संस्थान रिपोर्ट किए जाने वाले संघर्ष मामलों को रिकॉर्ड करने और हल करने के लिए जिम्मेदार होगा। [नियम 16] श्वानों के काटने की जानकारी सरकारी मेडिकल अस्पताल के साथ साझा करें। [नियम 16(2)] संदिग्ध Rabid श्वानों के निरीक्षण की व्यवस्था करें। [नियम 16(3-7)] श्वानों को निगरानी में रखने के लिए AWO को खर्चों की प्रतिपूर्ति करें। [नियम 16(8)] निराश्रित श्वानों के बारे में प्रचार सामग्री प्रदर्शित करें। [नियम 16(9)]	शिकायतों वाले श्वानों को मानवीय तरीके से पकड़ा जाएगा और एबीसी सेंटर में उनकी निगरानी की जाएगी; यदि वे बीमार हैं, तो उन्हें दिन में दो बार देखभाल के साथ अलग रखा जाना चाहिए। [16(3)]. संदिग्ध रेबीज़ मामलों में पशु चिकित्सक और AWO पैनल निरीक्षण की आवश्यकता होती है। [16(4)], संदिग्ध Rabid श्वानों को प्राकृतिक मृत्यु तक अलग रखा जाएगा (आमतौर पर 10 दिन) [16(5)] गैर-आक्रामक श्वानों को इलाज के लिए AWO में स्थानांतरित किया जाएगा और 10-दिन के निरीक्षण के बाद छोड़ दिया जाएगा। [16(6)]. संदिग्ध Rabid श्वानों के शवों को भस्मीकरण या सीवीओ-अनुमोदित तरीकों [16(7)] के माध्यम से निस्तारण किया जाएगा।
नियम 17, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	अंगों की गिनती और निस्तारण-	अंगों की गिनती पाक्षिक या मासिक आधार पर स्थानीय एबीसी निगरानी समिति द्वारा निर्धारित की गई नामित टीम द्वारा की जाएगी:- i मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी या उनके द्वारा प्राधिकृत कोई पशु चिकित्सा अधिकारी; ii परियोजना प्रभारी पशु चिकित्सा अधिकारी;	अंगों को 10% फॉर्मेल्डिहाइड में संग्रहित किया जाएगा। गिनती के बाद अंगों को अंग निरीक्षण दल की मौजूदगी में टैटू डाई का छिड़काव करके और गहरे दफनाकर या जलाकर तुरंत नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

		iii राज्य पशु क्रूरता निवारण बोर्ड या सोसायटी का प्रतिनिधि; iv किसी पशु कल्याण संगठन का प्रतिनिधि: बशर्ते कि पशु कल्याण संगठन जो पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम का क्रियान्वयन कर रहा है, अंग निरीक्षण दल का हिस्सा नहीं होगा। [नियम 17(1)]	अंगों को रंगने और दफनाने की प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग की जानी चाहिए और तारीख और समय की मुहर के साथ फोटो खींची जानी चाहिए।
नियम 19, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	बिल्लियों का नसबंदी और टीकाकरण	स्थानीय निकायों को:- बिल्ली नसबंदी कार्यक्रमों के लिए बुनियादी ढांचा और प्रतिपूर्ति प्रदान करना। [नियम 19(1)]	बिल्लियों की नसबंदी एबीसी केंद्र में की जा सकती है जहां श्वानों की नसबंदी की जाती है लेकिन बिल्लियों को श्वानों के साथ नहीं रखा जाना चाहिए। [नियम 19(2-3)]
नियम 20, पशु जन्म नियंत्रण नियम 2023	सामुदायिक पशुओं को भोजन देना-	स्थानीय निकायों को: निवासी कल्याण संघों और पशु देखभालकर्ताओं के सहयोग से सामुदायिक पशुओं के भोजन की व्यवस्था करें।	

प्रासंगिक विधि निर्णय एवं आदेश:

एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया बनाम पीपुल फॉर एलिमिनेशन ऑफ स्ट्रे ट्रबल एंड अन्य [एसएलपी (सी) 691/2009] में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का दिनांक 09.05.2024 का निर्णय : माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सभी नगर निगमों और नगर समितियों को पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 और पशु जन्म नियंत्रण से संबंधित नियमों से मार्गदर्शन लेने का निर्देश दिया। मनुष्यों के जीवन की रक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि PCA, 1960 या इसके तहत बनाए गए नियमों के कार्यान्वयन से बचने के लिए कोई प्रशासनिक चूक या छल नहीं होना चाहिए। इसके अलावा न्यायालय ने माना कि श्वानों की अंधाधुंध हत्या के लिए कानून में कोई प्रावधान नहीं है।

पशु वध एवं बूचड़खाना विनियम

पशु वध का विनियमन सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और पशु कल्याण सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय निकायों की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यह खंड पशु वध को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें लाइसेंसिंग आवश्यकताएं, भोजन के लिए अनुमेय प्रजातियां और वध की शर्तें शामिल हैं। स्थानीय निकायों इन विनियमों को लागू करने, नगरपालिका बूचड़खानों का प्रबंधन करने और खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के साथ समन्वय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन दिशानिर्देशों को लागू करके, स्थानीय निकायों पशुओं के साथ मानवीय व्यवहार सुनिश्चित कर सकते हैं, स्वच्छता मानकों को बनाए रख सकते हैं और अपने अधिकार क्षेत्र में अवैध वध को रोक सकते हैं।



पशुओं का वध

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
नियम 3, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001;	सामान्य प्रावधान	पशुओं का वध केवल लाइसेंस प्राप्त बूचड़खानों में ही किया जा सकता है।	किसी भी दुकान, नगरपालिका बाज़ार, पूजा स्थल आदि पर लाइसेंस के बिना पशुवध नहीं हो सकता । भेड़, बकरी, सुअर, खरगोश, मुर्गी महिषवंशीय पशु और मछली के अलावा किसी अन्य जानवर को भोजन के लिए मारने की अनुमति नहीं है। [खाद्य सुरक्षा और मानक (खाद्य उत्पाद मानक और खाद्य योजक) विनियम, 2011 का विनियमन 2.5] कोई भी पशु जो गर्भवती है, जिसकी 3 महीने से कम उम्र की संतान है , 3 महीने से कम उम्र का है या जिसका पशु चिकित्सक द्वारा फिटनेस प्रमाण पत्र जारी नहीं किया गया है, उसका वध नहीं किया जाएगा। [नियम 3, वधशाला नियम, 2001]
धारा 31, खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006; विनियमन 2.1.2 और अनुसूची I, खाद्य सुरक्षा एवं मानक (खाद्य व्यवसाय का लाइसेंस और पंजीकरण), विनियमन 2011	लाइसेंसिंग	स्थानीय निकायों केवल मांस की दुकान या बूचड़खाने के लिए एनओसी प्रदान करेगा, लेकिन इसके लिए लाइसेंस खाद्य सुरक्षा विभाग से व्यवसाय के परिमाण के आधार पर प्राप्त किया जाना चाहिए। [धारा 31, एफएसएस अधिनियम, 2006] [विनियमन 2.1.2 और अनुसूची I, एफएसएस लाइसेंसिंग विनियम, 2011]	पहले नगर निगम अधिकारियों और स्थानीय निकायों को लाइसेंस देने की अनुमति थी, लेकिन खाद्य सुरक्षा और मानक (खाद्य व्यवसाय का लाइसेंस और पंजीकरण), विनियम 2011 के बाद केवल एफएसएसएआई ही लाइसेंस जारी कर सकता है। ये लाइसेंस तभी जारी किए जा सकते हैं, जब बूचड़खाने और मांस की दुकानों ने नगर निगम से एनओसी प्राप्त कर ली हो। इस प्रकार, केवल एफएसएसएआई द्वारा जारी लाइसेंस ही वैध है।

			एफएसएसएआई दो प्रकार के लाइसेंस/पंजीकरण जारी करता है: क. बूचड़खानों के लिए: जहाँ जानवरों का वध किया जा सकता है निर्धारित तरीके से। ख. मांस की दुकानों के लिए: जहां मांस उत्पाद बेचे जा सकते हैं। बिना लाइसेंस के पशुओं को बेचने या वध करने पर 6 महीने तक की कैद और 5 लाख तक का जुर्माना हो सकता है। [खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 की धारा 63]
नियम 3(3), पशु क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001;	बूचड़खाने की क्षमता का निर्धारण	स्थानीय निकायों को: बूचड़खाने की क्षमता और स्थानीय आबादी की जरूरतों के आधार पर प्रत्येक बूचड़खाने में प्रतिदिन वध किए जाने वाले पशुओं की अधिकतम संख्या निर्धारित करना।	
नियम 8(1), पशु क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001;	वध करने वाले व्यक्ति के लिए लाइसेंस	स्थानीय निकायों को: पशुओं का वध करने के लिए व्यक्तियों को प्राधिकरण जारी करना।	
नियम 9(2), पशु क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001;	AWBI निरीक्षण रिपोर्ट के आधार पर उचित कार्रवाई	स्थानीय निकायों को: AWBI से प्राप्त बूचड़खानों की निरीक्षण रिपोर्टों के आधार पर कानूनी कार्यवाही शुरू करने सहित उचित कार्रवाई करना।	

विनियमन 2.1.2, भाग IV, धारा 10.03 एफएसएसएआई (खाद्य व्यवसायों का लाइसेंस और पंजीकरण) विनियम, 2011।	कानून और व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य से एनओसी	स्थानीय निकाय या पुलिस को: भैंस के मांस और सूअर के मांस की दुकानों को लाइसेंस देने से पहले कानून और व्यवस्था के दृष्टिकोण से एनओसी देना।	
विनियमन 2.1.2, भाग IV, धारा 10.04 एफएसएसएआई (खाद्य व्यवसायों का लाइसेंस और पंजीकरण) विनियम, 2011।	मांस निरीक्षण के लिए पशु चिकित्सा कर्मचारियों की नियुक्ति	स्थानीय निकायों को: मांस निरीक्षण (मृत्यु पूर्व और मृत्यु पश्चात) के लिए योग्य पशु चिकित्सा कर्मचारियों की नियुक्ति करना।	यदि नियमित कर्मचारी उपलब्ध न हों तो शहरी स्थानीय निकाय पशुपालन विभागों के साथ अनुबंध व्यवस्था कर सकते हैं।
धारा 422, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	बूचड़खानों की स्थापना और संचालन के संबंध में शहरी स्थानीय निकायों की शक्ति	स्थानीय निकाय नगर आयुक्त को निम्नलिखित के लिए अधिकृत कर सकते हैं: निगम सीमा के भीतर बूचड़खानों के लिए भूमि/भवन का अधिग्रहण; सीमा से बाहर होने पर राज्य सरकार की मंजूरी की आवश्यकता। [422(ए)] उपयोगकर्ताओं के लिए आवश्यक सुविधाओं के साथ बूचड़खाने, शेड, बाड़े और अन्य इमारतों का निर्माण और रखरखाव करना। [422(बी)] बूचड़खाने बंद करें और परिसर का निस्तारण करें। [422(डी)]	
धारा 423, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	निजी बूचड़खानों का विनियमन	स्थानीय निकायों यह निर्धारित करेगा कि क्या उसके अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में नए निजी	1. स्वीकृति नोटिस हिंदी और निगम द्वारा निर्दिष्ट भाषाओं में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए [423(3)]

		बाजार/बूचड़खाने खोलने की अनुमति है; निगरानी करेगा और नोटिस देकर रद्द/निलंबित करेगा - इसके लिए अधिनियम/नियम/उपनियमों का अनुपालन आवश्यक है। [423(1-6)]	2. स्थान का स्वामी/कब्जाधारी प्रतिष्ठान संचालक माना जाएगा [423(3) स्पष्टीकरण] 3. भुगतान की लिखित रसीद न देने पर लाइसेंस रद्द किया जा सकता है [423(5)]
धारा 424, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं की आवाजाही पर नियंत्रण	स्थानीय निकायों द्वारा जीवित मवेशियों/भेड़/बकरी/सूअर को निगम वधशाला, बाजार, परिसर, स्टॉकयार्ड से हटाने का दायित्व।	लिखित अनुमति और शुल्क आवश्यक।
धारा 425, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	बाज़ारों में प्रवर्तन	स्थानीय निकाय निगम बाजारों से नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को निष्कासित करेगा तथा पट्टे रद्द करेगा।	
धारा 429, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	वध विनियमन	स्थानीय निकाय पशु वध को निगम या लाइसेंस प्राप्त निजी बूचड़खानों तक सीमित रखेगा।	पशु क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001 द्वारा प्रतिस्थापित।
धारा 430, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	गैर-वाणिज्यिक वध का विनियमन	स्थानीय निकाय गैर-वाणिज्यिक वध के लिए परिसर निर्धारित करेगा तथा अन्यत्र इस पर प्रतिबंध लगाएगा।	पशु क्रूरता निवारण (वधशाला) नियम, 2001 के अनुसार पशु बलि अवैध है।
धारा 432, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	आयात विनियमन	स्थानीय निकाय शहर में पशुओं और मांस के आयात को नियंत्रित करेगा।	लिखित अनुमति आवश्यक।
धारा 433, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	निरीक्षण और जब्ती शक्तियां	स्थानीय निकाय अनधिकृत वध या मांस बिक्री की जांच के लिए परिसर में प्रवेश करेंगे, पशुओं/मांस को जब्त करेंगे और उनका निस्तारण करेंगे।	

धारा 434, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	खाद्य निरीक्षण	स्थानीय निकाय मानव उपभोग के लिए बेचे जाने वाले खाद्य पदार्थों के निरीक्षण की व्यवस्था करेगा।	
धारा 435-436, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	अस्वास्थ्यकर भोजन की जब्ती	स्थानीय निकायों द्वारा खराब या अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को जब्त कर उनका निस्तारण करना।	
धारा 437, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	आपत्तिजनक व्यापार का विनियमन	स्थानीय निकाय उन व्यवसायों के लिए भवनों/परिसरों के उपयोग को नियंत्रित करेगा जो सार्वजनिक उपद्रव का कारण बन सकते हैं।	
धारा 439, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	कसाईयों को लाइसेंस देना	कसाईयों और मांस विक्रेताओं द्वारा स्थानीय निकायों से लाइसेंस/NOC प्राप्त करना अनिवार्य होगा ।	

प्रासंगिक विधि निर्णय एवं आदेश:

1. लक्ष्मी नारायण मोदी बनाम भारत सरकार एवं अन्य।

लक्ष्मी नारायण मोदी बनाम भारत सरकार एवं अन्य [डब्ल्यूपी(सी) 309/2003] में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का आदेश दिनांक 23.08.2012 : लक्ष्मी नारायण मोदी बनाम भारत सरकार एवं अन्य [डब्ल्यूपी(सी) 309/2003] में दिनांक 23.08.2012 का आदेश देखें मोदी बनाम भारत सरकार एवं अन्य मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सभी को निर्देश जारी किए। राज्य और केंद्र शासित प्रदेश सरकारें राज्य बूचड़खाना निगरानी समितियों का गठन करेंगी ["राज्य एसएमसी"] सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसार। अंतर-विभागीय समिति लाइसेंस प्राप्त और गैर-लाइसेंस प्राप्त दोनों ही स्थितियों को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है।

2. कॉमन कॉज, एक पंजीकृत सोसायटी बनाम भारत सरकार और अन्य।

कॉमन कॉज में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का आदेश दिनांक 17.02.2017, एक पंजीकृत। सोसाइटी बनाम भारत सरकार और अन्य [रिट याचिका(C) 330 of 2001]: माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा न्यायालय ने 17.02.2017 के आदेश के तहत निर्देश दिया कि स्थानीय निकायों सहित प्रत्येक राज्य के प्राधिकारियों को बूचड़खानों के संबंध में सभी वैधानिक आवश्यकताओं का पालन करना होगा। कानून के प्रासंगिक अनिवार्य प्रावधानों का संग्रह बनाया गया और सभी को वितरित किया गया राज्य सरकारों से कड़ाई से पालन करने का अनुरोध किया गया।

नगरपालिका बाज़ारों और पशु बाज़ारों का प्रबंधन और नियंत्रण

स्थानीय निकायों को नगरपालिका बाजारों और पशु बाज़ारों के प्रबंधन और नियंत्रण का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है। यह खंड इन सुविधाओं की स्थापना, रखरखाव और विनियमन में स्थानीय निकायों की जिम्मेदारियों का विवरण देता है। इसमें बाजार की स्थापना, पंजीकरण, समिति गठन और निरीक्षण प्रोटोकॉल जैसे पहलुओं को शामिल किया गया है। इन स्थानों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करके, स्थानीय निकाय उचित पशु कल्याण सुनिश्चित कर सकते हैं, सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों को बनाए रख सकते हैं और क्रूरता और अवैध कार्यों को रोकते हुए पशुधन के संगठित व्यापार को सुविधाजनक बना सकते हैं।



नगर निगम बाज़ारों और पशु बाज़ारों का प्रबंधन और नियंत्रण

नियम	प्रावधान	विशिष्ट	टिप्पणी
नियम 6, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	नये पशु बाजारों की स्थापना	स्थानीय निकाय: 1. उपयुक्त स्थान की पहचान करें 2. पशु बाजार का खाका तैयार करें 3. अनुमोदन के लिए जिला पशु बाजार निगरानी समिति को प्रस्तुत करें	जिला पशु बाजार निगरानी समिति निम्नलिखित कार्य कर सकती है: 1. ब्लूप्रिंट को मंजूरी दें 2. संशोधन की मांग करें 3. प्रस्ताव अस्वीकृत करें (लिखित कारणों सहित) प्रत्येक नये पशु बाजार को जिला पशु बाजार निगरानी समिति के समक्ष पंजीकरण के लिए आवेदन करना होगा।
नियम 5, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	मौजूदा पशु बाज़ारों का पंजीकरण	स्थानीय निकाय: 1. नियम लागू होने से पहले क्रियाशील पशु बाजारों की सूची बनाएं 2. सुनिश्चित करें कि मौजूदा बाजार जिला पशु बाजार निगरानी समिति के साथ पंजीकृत हों	पंजीकरण की अंतिम तिथि: नियम लागू होने के 3 महीने के भीतर।
नियम 4, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	पशु बाजार समिति (एनिमल मार्किट समिति) का गठन	स्थानीय निकाय जिला पशु बाजारों के प्रबंधन के लिए जिला मजिस्ट्रेट और राज्य बोर्ड के परामर्श से समिति का गठन करेंगे।	समिति की संरचना: 1. स्थानीय प्राधिकरण के अध्यक्ष (चेयरमैन) 2. मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सदस्य सचिव) 3. क्षेत्राधिकारी (तहसीलदार) 4. वन रेंज अधिकारी 5. पशु चिकित्सा अधिकारी 6. पुलिस निरीक्षक 7. एसपीसीए प्रतिनिधि 8. पशु कल्याण संस्थानों से 2 प्रतिनिधि बैठक के लिए कम से कम पांच सदस्यों की आवश्यकता होती है। PCA 1960 या उत्तर प्रदेश गौवध निवारण अधिनियम के तहत दोषी ठहराए गए व्यक्तियों को समिति का सदस्य बनने से प्रतिबंधित किया गया है।

नियम 10, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	राज्य बोर्ड के निर्देशों का अनुपालन	नियमों के अनुपालन को सुगम बनाने के लिए स्थानीय निकायों को राज्य बोर्ड द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करना होगा।	राज्य बोर्ड स्थानीय निकायों और जिला पशु बाजार निगरानी समिति को निर्देश जारी कर सकता है स्थानीय निकायों को पशु बाजार के कामकाज से संबंधित सभी रिकॉर्ड और जानकारी राज्य बोर्ड को आवश्यकतानुसार उपलब्ध करानी होगी।
नियम 11, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	निरीक्षण का प्राधिकरण	स्थानीय निकाय अपने अधिकारियों को निम्नलिखित के लिए प्राधिकृत कर सकते हैं: 1. पशु बाज़ार में प्रवेश करें और उसका निरीक्षण करें 2. रिकॉर्ड प्रस्तुत करने की मांग करना 3. क्रूरता से व्यवहार किए गए पशुओं को जब्त करना 4. क्रूरता के फोटोग्राफिक और वीडियो सबूत लें।	जब्त किए गए पशुओं को स्थानीय एसपीसीए या मान्यता प्राप्त पशु कल्याण संसथान की हिरासत में रखा जाएगा।
नियम 12, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	पशु बाज़ारों में पशु चिकित्सा निरीक्षक	प्रत्येक पशु बाजार में पर्याप्त संख्या में पशु चिकित्सा निरीक्षक और पैरा - वेटेरिनारिअन्स कर्मचारी होंगे।	जिला पशु बाजार निगरानी समिति द्वारा अधिकृत।
नियम 12(2), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	प्रवेश-पूर्व स्क्रीनिंग	बाजार में प्रवेश करने से पहले पशुओं में संदिग्ध संक्रामक और संक्रमणकारी रोगों की जांच करें।	रोगों में Foot and Mouth Disease, Glanders, Strangles, Peste des petits, Rinder Pest आदि शामिल हैं। संदिग्ध जानवरों को प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी और उनका उपचार किया जाएगा या उन्हें वापस भेज दिया जाएगा।

नियम 12(3), 12(4), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	आगमन निरीक्षण	पशुओं के उतरने और आगमन की निगरानी करना। आगमन के बाद यथाशीघ्र सभी पशुओं का निरीक्षण करें। परिवहन दस्तावेज़ के अनुसार लोड की जाँच करें।	
नियम 12(5), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	पशुओं का उपचार	बीमार, अस्वस्थ या घायल जानवरों का उपचार करना या उनके उपचार की देखरेख करना।	
नियम 12(6), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	हैंडलिंग पर्यवेक्षण	बाजार में सभी पशुओं के रख-रखाव की निगरानी करें तथा मानवीय तरीके से उनका रख-रखाव सुनिश्चित करें।	
नियम 12(7), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	लोडिंग पर्यवेक्षण	बाज़ार से पशुओं को लाने-ले जाने की निगरानी करना। सुनिश्चित करें कि सभी जानवर यात्रा के लिए स्वस्थ हैं। आवश्यक पशु चिकित्सा प्रमाणीकरण प्रदान करें। जिला मजिस्ट्रेट या कलेक्टर की लिखित अनुमति के बिना ऊंटों को नहीं लादा जा सकता।	
नियम 12(8). पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	रिकॉर्ड रखना	सभी पशुओं का निरीक्षण, उपचार, जारी किए गए प्रमाणपत्र और अयोग्य पशुओं का रिकॉर्ड बनाए रखें।	परिवहन के लिए अयोग्य पाए गए पशुओं के लिए की गई कार्रवाई शामिल करें।

नियम 12(9), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	आपातकालीन दयामृत्यु	गंभीर रूप से घायल या असाध्य रूप से बीमार पशुओं के लिए आपातकालीन दयामृत्यु का प्रावधान सुनिश्चित करना।	सभी शवों को, जिनमें प्राकृतिक रूप से मृत पशु भी शामिल हैं, जला दिया जाएगा, बेचा नहीं जाएगा या चमड़े के लिए उनकी खाल नहीं उतारी जाएगी।
नियम 12(10), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	अयोग्य पशुओं को चिन्हित करना	बिक्री के लिए अनुपयुक्त पशुओं को चिह्नित करें।	
नियम 12(11), पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	परिवहन पर्यवेक्षण	सुनिश्चित करें कि पशुओं का परिवहन केवल अधिकृत वाहनों में ही किया जाए। पशुओं को अधिक भार या अनुचित तरीके से बांधने से रोकें। किसी भी लोडिंग विधि से बचें जिससे चोट लग सकती है।	
नियम 25, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	अयोग्य पशुओं को हिरासत में रखना और उनका उपचार	अयोग्य पशुओं को निर्दिष्ट बाड़ों या उपयुक्त स्थानों पर ले जाया जा सकता है। अयोग्य पशुओं का इलाज किया जा सकता है या उन्हें पीड़ा से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं। पशु बाजार समिति को उपचार के लिए पशुओं को रोकने की आवश्यकता हो सकती है। कोई भी व्यक्ति पशु चिकित्सा निरीक्षक की अनुमति के बिना हिरासत में लिए गए पशुओं को नहीं ले जाएगा। पशु बाजार समिति पशु चिकित्सा निरीक्षक की सहायता करेगी और पशुओं के स्वामित्व की जानकारी उपलब्ध कराएगी।	

नियम 18, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	पशुओं को पेन/बाड़े में बंद करना और पिंजरे में रखना	मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) के माध्यम से स्थानीय निकाय पशुओं के लिए उचित आवास सुनिश्चित करेंगे: 1. आकार-विशिष्ट आवश्यकताएँ: - बछड़े/सूअर: एक साथ लेटने, खड़े होने, घूमने के लिए जगह - मुर्गी: खड़े होने, लेटने, पंख फैलाने, घूमने के लिए जगह - दरवाजे का आकार आरामदायक आवागमन की अनुमति देता है 2. पेन वितरण निम्न पर आधारित: - प्रजाति के अनुसार अलग-अलग पेन - आयु और आकार आधारित वितरण - उग्र पशुओं के लिए अलग बाड़े - भीड़भाड़ की रोकथाम 3. बैलों के लिए विशेष प्रावधान: - एक साथ रखने पर सिर/गर्दन को सुरक्षित रखना अनिवार्य है। 4. सूअरों (Boars) के लिए विशेष प्रावधान: -छह महीने से अधिक उम्र के सूअरों को अन्य जानवरों के समान अविभाजित बाड़े में नहीं रखा जाता है। 5. जानवरों के भागने से रोकने के लिए पर्याप्त प्रावधान होने चाहिए।	पशु बाजार समिति के सदस्य सचिव के रूप में सीएमओ नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है।
नियम 19, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	फ़ीड/आहार मूल्य विनियमन	स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे: पशु बाजार में पशु आहार एक निर्धारित मूल्य पर बेचा जाता है।	

नियम 20-21, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था, बिस्तर और ढके हुए आवास का प्रावधान	स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे: - पशुओं के निरीक्षण और चारा/पानी के लिए पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था। - पशुओं के लिए उपयुक्त गुणवत्ता वाले बिस्तर की पर्याप्त आपूर्ति। पशुओं के लिए कवर आवास	
नियम 22, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	मवेशियों की बिक्री पर प्रतिबंध	स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे: 1. दस्तावेज़ आवश्यकताएँ:- पहचान प्रमाण के साथ मालिक की घोषणा - मवेशी पहचान विवरण 2. बिक्री प्रक्रिया: - व्यय संग्रह - क्रेता पहचान प्रमाण - राजस्व दस्तावेज़ सत्यापन 3. रिकॉर्ड रखरखाव: - 6 महीने तक प्रतिधारण - 5-प्रतियां बिक्री दस्तावेज - निर्दिष्ट प्राधिकारियों को वितरण स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से मवेशियों की बिक्री को निम्नानुसार विनियमित करेंगे: बिक्री-पूर्व आवश्यकताएँ: 1. 6 माह से कम उम्र के पशुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाएँ 2. मालिक/अधिकृत एजेंट से लिखित घोषणा अनिवार्य करें बिक्री प्रक्रिया आवश्यकताएँ: 1. पहले से बेचे गए पशु को हटाने से पहले:	सदस्य सचिव के माध्यम से स्थानीय निकायों की भूमिका: 1. सभी निर्दिष्ट दस्तावेज़ों को बनाए रखना 2. आवश्यक घोषणाओं का सत्यापन करना 3. निर्धारित अवधि के लिए उचित रिकॉर्ड रखना सुनिश्चित करना लिखित घोषणा में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिए: 1. मालिक का नाम, पता और फोटो पहचान प्रमाण 2. मवेशी पहचान विवरण पशु बाजार समिति को ऐसी घोषणाओं को 6 माह तक बनाए रखना होगा तथा मांगे जाने पर निरीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करना होगा तथा आवश्यकतानुसार घोषणा की एक प्रति/अंश उपलब्ध कराना होगा। क्रेता के दायित्व: 1. राज्य के पशु संरक्षण कानूनों का पालन करें 2. उचित अनुमति के बिना अंतरराज्यीय बिक्री नहीं

		. मूलभूत सुविधाओं के लिए स्वीकृत व्यय एकत्रित करना . पहचान प्रमाण के साथ क्रेता का विवरण दर्ज करें . राजस्व दस्तावेजों के माध्यम से कृषक स्थिति का सत्यापन करें दस्तावेज़ीकरण: वितरण हेतु बिक्री प्रमाण की 5 प्रतियां जारी करें: 1. ग्राहक 2. विक्रेता 3. तहसील कार्यालय (क्रेता का निवास) 4. मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी (क्रेता का जिला) 5. पशु बाजार समिति का रिकॉर्ड	
नियम 23, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	बुनियादी ढांचे की आवश्यकताएं	स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे: 1. भौतिक अवसंरचना: - सुरक्षित मार्ग - कोई तीखे किनारे/उभार नहीं - पर्याप्त जल आपूर्ति - उचित पेयजल सुविधाएं - पर्याप्त वेंटिलेशन 2. रिकॉर्ड रखरखाव: - प्रजातिवार पशु संख्या	
नियम 24, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुधन बाजार विनियमन) नियम, 2017	अनुपयुक्त पशु आवास	स्थानीय निकाय सीएमओ के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे: 1. विशेष प्रावधान: - उपयुक्त अलग पेन - स्पष्ट अंकन - अभिगम नियंत्रण 2. प्रवेश प्रतिबंध: - केवल पशु चिकित्सा निरीक्षक प्राधिकरण के अधीन	

धारा 422 (b), उ0प्र0 नगर निगम अधिनियम, 1959	नगर आयुक्त की शक्तियां	नगर आयुक्त निगम बाजारों, स्टॉक-यार्डों, स्टॉलों, दुकानों, शेडों, बाड़ों और अन्य भवनों का निर्माण और रखरखाव करेगा।	
धारा 422 (d), उ0प्र0 नगर निगम अधिनियम, 1959	नगर आयुक्त की शक्तियां	आवश्यकता अनुसार, नगर आयुक्त को निगम के बाजारों, को बंद करने और परिसर का निपटान करने के लिए अधिकृत किया गया है।	निगम की पूर्व स्वीकृति आवश्यक है।
धारा 422 f), उ0प्र0 नगर निगम अधिनियम, 1959	नगर आयुक्त की शक्तियां	नगर आयुक्त को निगम बाजार की सुविधाओं और सेवाओं के उपयोग के लिए शुल्क लगाने की अनुमति है।	कार्यकारी समिति का अनुमोदन आवश्यक है।
धारा 423, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	निजी बूचड़खानों का विनियमन	स्थानीय निकायों यह निर्धारित करेगा कि क्या उसके अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में नए निजी बाजार खोलने की अनुमति है; निगरानी करेगा और नोटिस देकर रद्द/निलंबित करेगा - इसके लिए अधिनियम/नियम/उपनियमों का अनुपालन आवश्यक है। [423(1-6)]	स्वीकृति नोटिस हिंदी और निगम द्वारा निर्दिष्ट भाषाओं में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए [423(3)] स्थान का स्वामी प्रतिष्ठान संचालक माना जाएगा [423(3) स्पष्टीकरण] भुगतान की लिखित रसीद न देने पर लाइसेंस/NOC रद्द किया जा सकता है [423(5)]
धारा 424, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं की आवाजाही पर नियंत्रण	स्थानीय स्थानीय निकायों द्वारा जीवित मवेशियों/भेड़/बकरी/सूअर को निगम वधशाला, बाजार, परिसर, स्टॉकयार्ड से हटाने का विनियमन करेगा।	लिखित अनुमति और शुल्क आवश्यक।
धारा 425, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	बाज़ारों में प्रवर्तन	स्थानीय निकाय निगम बाजारों से नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को निष्कासित करेगा तथा पट्टे रद्द करेगा।	

धारा 426, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	विक्रेताओं को लाइसेंस देना	स्थानीय निकाय को निगम बाजारों में बिक्री के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होगी।	
धारा 428, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	बाज़ारों के बाहर बिक्री का विनियमन	शहरी स्थानीय निकाय लाइसेंस प्राप्त बाजारों/प्रतिष्ठानों के बाहर कुछ वस्तुओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगाएगा।	
धारा 432, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	आयात विनियमन	शहरी स्थानीय निकाय शहर में पशुओं के आयात को नियंत्रित करेगा।	लिखित अनुमति आवश्यक।
धारा 434, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	खाद्य निरीक्षण	शहरी स्थानीय निकाय मानव उपभोग के लिए बेचे जाने वाले खाद्य पदार्थों के निरीक्षण की व्यवस्था करेगा।	
धारा 435-436, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	अस्वास्थ्यकर भोजन की जब्ती	स्थानीय निकायों द्वारा खराब या अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को जब्त कर उनका निस्तारण करना।	
धारा 437, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	आपत्तिजनक व्यापार का विनियमन	शहरी स्थानीय निकाय उन व्यवसायों के लिए भवनों के उपयोग को नियंत्रित करेगा जो सार्वजनिक उपद्रव का कारण बन सकते हैं।	
धारा 438, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	कुछ व्यवसायों का लाइसेंस	स्थानीय निकायों को निर्दिष्ट वस्तुओं या जानवरों को रखने और संभावित रूप से खतरनाक व्यापार करने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होगी।	

धारा 439, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	कसाईयों को लाइसेंस देना	स्थानीय निकायों कसाईयों और मांस विक्रेताओं के लिए लाइसेंस अनिवार्य करेगा।	



पालतू पशु

पालतू पशुओं, खास तौर पर श्वानों का विनियमन, स्थानीय निकायोंकेअधिकार क्षेत्र में आता है। यह खंड श्वानों के प्रजनन प्रतिष्ठानों और पालतू जानवरों की दुकानों को लाइसेंस देने के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों पर श्वानों पर नियंत्रण के उपायों को लागू करने के बारे में दिशा-निर्देश प्रदान करता है। शहरी क्षेत्रों में स्थानीय निकायों को सार्वजनिक सुरक्षा चिंताओं और पशु कल्याण संबंधी विचारों के बीच संतुलन बनाना चाहिए।



पालतू पशु

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
नियम 13, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (श्वान प्रजनन और विपणन) नियम, 2017,	श्वान प्रजनन प्रतिष्ठानों का लाइसेंस	स्थानीय निकाय किसी भी श्वान को प्रजनन के लिए रखने या रखने के लिए लाइसेंस तब तक नहीं देंगे, जब तक कि उसने राज्य पशु कल्याण बोर्ड से पंजीकरण नहीं करा लिया हो।	
नियम 14, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पालतू पशु दुकान) नियम, 2018	पालतू पशुओं की दुकानों का लाइसेंस	स्थानीय निकाय किसी भी पालतू पशु की दुकान को तब तक लाइसेंस नहीं देंगे, जब तक दुकान ने राज्य पशु कल्याण बोर्ड से पंजीकरण नहीं करा लिया हो।	
धारा 172(2)(1)(ई), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	श्वानों पर कराधान	स्थानीय निकाय शहर में रखे गए श्वानों पर कर लगाएंगे- यह कर पंजीकरण शुल्क के माध्यम से लगाया जा सकता है।	शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/नौ-8-23-89ज/2017] के सन्दर्भ में, देसी नस्ल के श्वानों का पंजीकरण निशुल्क है।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/नौ-8-23-89ज/2017]	श्वानों का पंजीकरण	स्थानीय निकायों को 3 महीने से अधिक आयु के श्वानों का पंजीकरण करना होगा तथा 1 वर्ष के लिए वैध लाइसेंस जारी करना होगा (प्रतिवर्ष नवीनीकरण किया जाएगा) शहरी स्थानीय निकाय समय-समय पर पंजीकरण का निरीक्षण करेंगे। पंजीकरण नवीनीकरण के लिए रेबीज टीकाकरण अनिवार्य है।	देसी नस्ल के श्वानों को गोद लेने पर शुल्क से छूट। यदि एबीसी कैम्पस क्षेत्राधिकार में है तो नसबंदी और पहला टीकाकरण निःशुल्क किया जाएगा ।

शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	श्वानों के पंजीकरण के लिए दो श्रेणियां	शहरी स्थानीय निकाय श्वानोंको निम्न प्रकार से पंजीकृत करेंगे: गैर-प्रजनन: वे श्वानों जो प्रजनन के लिए नहीं हैं प्रजनन: वे श्वानों जो प्रजनन के लिए हैं।	प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग आवश्यकताएँ शासनादेश में अंकित हैं।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	गैर प्रजनन श्वानों के पंजीकरण के लिए आवश्यक दस्तावेज	स्थानीय निकाय केवल तभी पंजीकरण प्रदान करेंगे जब पालतू पशुस्वामी निम्नलिखित दस्तावेज प्रस्तुत करेगा: वार्षिक टीकाकरण प्रमाणपत्र एक वर्ष की आयु के बाद नसबंदी प्रमाणपत्र।	200 वर्ग गज के घर में अधिकतम 2 श्वानों की अनुमति है (प्रत्येक 2 अतिरिक्त श्वानों के लिए अतिरिक्त 100 वर्ग गज की आवश्यकता होगी) पालतू जानवरों के मालिकों को लिंग, रंग, नस्ल और रेबीज टीकाकरण की तारीख के बारे में जानकारी देनी होगी।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	प्रजनन के लिए प्रयुक्त श्वानों के पंजीकरण के लिए आवश्यक दस्तावेज	स्थानीय निकायों केवल प्रजनकों द्वारा निम्नलिखित दस्तावेज प्रस्तुत करने के बाद ही पंजीकरण प्रदान करेंगे: वार्षिक टीकाकरण प्रमाणपत्र पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (कुत्ते प्रजनन और विपणन) नियम, 2017 के अनुपालन की घोषणा उत्तर प्रदेश राज्य पशु कल्याण बोर्ड से पंजीकरण प्रमाण पत्र	प्रजनन की अनुमति केवल निर्दिष्ट वाणिज्यिक क्षेत्रों में ही है व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले श्वानों को लागू राज्य नियमों और विनियमों के अनुसार रखा जाना चाहिए।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	दो से अधिक श्वानों को रखने की विशेष परिस्थितियाँ	अधिक कुत्ते रखने के अपवाद: शहरी स्थानीय निकाय सामान्यतः निम्नलिखित की अनुमति देते हैं: 200 वर्ग गज के प्लॉट में 2 श्वान 300 वर्ग गज के प्लॉट में 4 श्वान 5+ कुत्ते: आश्रय संबंधी दिशानिर्देश लागू होते हैं।	श्वानों के आश्रय के लिए दिशानिर्देश: श्वानों के लिए आश्रय स्थल विशिष्ट क्षेत्र में होना चाहिए। पर्याप्त देखभाल/रखरखाव व्यवस्था। स्थानीय निकाय को अनिवार्य सूचना का प्रावधान। लाइसेंस का नवीनीकरण प्रत्येक 6 माह में होगा, जिसका नियमित निरीक्षण स्थानीय निकायों के प्राधिकृत अधिकारियों द्वारा किया जाएगा।

		उत्तर प्रदेश राज्य पशु कल्याण बोर्ड से स्पष्टीकरण और अनुमति की आवश्यकता है (यदि सीमा से अधिक हो) पर्याप्त स्थान एवं निर्धारित शुल्क आवश्यक।	प्रत्येक श्वान के लिए पहचान संख्या और कार्ड/दस्तावेज सभी श्वानों की दैनिक सूची बीमार पशु प्रबंधन खाद्य एवं औषधि सूची प्रत्येक श्वान के लिए क्षेत्र का विवरण जल आपूर्ति दस्तावेज़ फ़ोन/हेल्पलाइन रजिस्टर नवीनतम टीकाकरण रिकॉर्ड एबीसी प्रमाण पत्र
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	स्थानीय निकायों के लिए निरीक्षण दिशानिर्देश	स्थानीय निकायों का निरीक्षण राज्य पशु कल्याण बोर्ड के साथ पंजीकृत हैं। पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पालतू जानवरों की दुकान) नियम, 2018 एवं पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (श्वान प्रजनन और विपणन) नियम, 2017, का अनुपालन करें।	शहरी स्थानीय निकाय स्थान संबंधी आवश्यकताओं और प्रबंधन नियमों के अनुपालन की पुष्टि करने के बाद ही लाइसेंस प्रदान करेंगे।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	लाइसेंस अवधि: श्वानों की संख्या के आधार पर वैधता अवधि	स्थानीय निकायों को जारी करना होगा: अधिकतम 4 श्वानों के लिए 1 वर्ष का लाइसेंस 5+ श्वानों के लिए 6 महीने का लाइसेंस (आश्रय आवश्यक) शहरी स्थानीय निकाय विशिष्ट पंजीकरण शुल्क निर्धारित करेंगे।	5+ श्वानों के लिए राज्य बोर्ड अनुमति से अनुमति लेना अनिवार्य होगा।
शासन आदेश दिनांक 28 फ़रवरी 2023 [संख्या- 415/ नौ-8-23-89ज/2017]	घायल/ असहाय/ बीमार देसी नस्ल के श्वानों को रखने की आवश्यकताएं	आवासीय क्षेत्रों में बिना किसी अनिवार्य लाइसेंस के 4 घायल/ असहाय/बीमार भारतीय कुत्तों को अनुमति दी जाएगी। ऐसे 5 या अधिक कुत्तों के लिए आश्रय संबंधी दिशानिर्देश लागू होंगे।	

केस प्रॉपर्टी पशुओं का देखभाल और रखरखाव

यह तालिका मुख्य रूप से पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (केस प्रॉपर्टी पशुओं की देखभाल और रखरखाव) नियम, 2017 पर आधारित केस प्रॉपर्टी पशुओं के जब्ती, देखभाल और रखरखाव के लिए प्रमुख विनियमों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है ।



केस प्रॉपर्टी पशुओं का देखभाल और रखरखाव

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
नियम 5 पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (केस प्रॉपर्टी पशुओं की देखभाल और रखरखाव) नियम, 2017	बांड का निष्पादन और स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी	1. मजिस्ट्रेट पशु देखभाल लागत के लिए बांड राशि निर्धारित करता है। 2. अभियुक्त और पशुस्वामी को तीन दिन के भीतर बॉन्ड निष्पादित करना होगा। 3. यदि बांड निष्पादित नहीं किया जाता है, तो पशु निम्न संगठनों को जब्त कर लिया जाएगा: पशु कल्याण संगठन, SPCA, अस्पताल, पिंजरापोल, या गौशाला। 4. यदि पशुस्वामी और अभियुक्त बांड प्रस्तुत नहीं कर सकते, तो मजिस्ट्रेट स्थानीय निकायों को लागत वहन करने का निर्देश देता है।	इस लागत में जब्त पशुओं के परिवहन, रखरखाव और उपचार शामिल हैं। स्थानीय निकायों द्वारा लागत को भू-राजस्व के बकाया के रूप में वसूल किया जाएगा। यह कानून क्रूरता के मामलों में केस संपत्ति के रूप में जब्त किए गए पशुओं पर लागू होता है।
2017, नियम 6(1), पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (केस संपत्ति की देखभाल और रखरखाव)पशु) नियम, 2017	परित्यक्त पशुओं का प्रबंधन	शहरी स्थानीय निकाय परित्यक्त पशुओं की देखभाल का खर्च उठाएगा।	यह तब लागू होता है जब जांच अधिकारी अभियुक्त या पशुस्वामी का निर्धारण नहीं कर पाता। त्यागपत्र से अज्ञात अपराधियों/मालिकों के विरुद्ध आपराधिक आरोपों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

प्रासंगिक विधि निर्णय आदेश:

रघुराम शर्मा एवं अन्य बनाम सी. तुलसी एवं अन्य [आपराधिक ए. 230/2022] में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का दिनांक 05.02.2020 का आदेश : इस मामले में भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया कि मवेशियों की अंतरिम सुपुर्तगी अभियुक्तों को नहीं सौंपी जानी चाहिए। यह भी निर्देश दिया गया कि मवेशियों/पशुओं की सुपुर्तगी अपीलकर्ताओं द्वारा रखी जाए, बशर्ते कि उनकी प्रोफ़ाइल और मवेशियों की पहचान का सत्यापन हो जाए। ये निर्देश यह सुनिश्चित करने के महत्व को दर्शाते हैं कि प्रथम दृष्टया क्रूरता के अधीन रहे पशुओं को अभियुक्तों को वापस नहीं किया जाना चाहिए।

मेहर बानू बेगम बनाम असम राज्य एवं अन्य में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का दिनांक 26.09.2022 का आदेश [विविध आवेदन संख्या 1620/2022 एसएलपी (आपराधिक) संख्या 9997/2021 में]: भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने पुष्टि की कि पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (केस प्रॉपर्टी पशुओं की देखभाल और रखरखाव) नियम, 2017 के नियम 5 के तहत आवश्यक बॉन्ड का भुगतान न करने पर पशु को जब्त किया जा सकता है। यह इस सिद्धांत को रेखांकित करता है कि केस प्रॉपर्टी नियम, 2017 पशुओं की हिरासत को अभियुक्त को वापस करने की अनुमति नहीं देता है।

मुस्तकीम बनाम यू.पी. 32: माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि एक बार किसी व्यक्ति से किसी पशु को जब्त कर लिया जाता है क्योंकि जब वह पशु उसके कब्जे में था, तब उसके साथ क्रूरता की गई थी, किसी भी परिस्थिति में पशु को उसी व्यक्ति को वापस नहीं किया जाना चाहिए जिसने पहले उक्त पशु पर क्रूरता की थी।

मवेशी पाउंड और पिंजरा पोल

स्थानीय निकायों को मवेशी बाड़े और पिंजरा पोल (पशु आश्रय) स्थापित करने और उनका प्रबंधन करने का अधिकार है। यह खंड पशु कल्याण संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक प्रबंधन सहित इन सुविधाओं के निर्माण, रखरखाव और संचालन के लिए कानूनी प्रावधानों को शामिल करता है। निराश्रित पशुओं की समस्याओं को दूर करने और शहरी क्षेत्रों में छोड़े गए जानवरों को आश्रय प्रदान करने के लिए इन सुविधाओं का प्रभावी प्रबंधन आवश्यक है।



मवेशी पाउंड और पिंजरा पोल

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट
धारा 114(xxxiv-c), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	अनिवार्य कर्तव्य	स्थानीय निकाय को पशु बाड़ों के निर्माण और रखरखाव की व्यवस्था करनी चाहिए तथा पशुओं के प्रति क्रूरता के रोकथाम के लिए भी बाध्य होना चाहिए।
धारा 114 (xxxiv-c), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	क्रूरता की रोकथाम	स्थानीय निकाय सुधार योजनाओं में पशुपालन केन्द्र तथा पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण को शामिल कर सकता है।
नियम 4(4) पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण के लिए सोसायटियों की स्थापना और विनियमन) नियम, 2001	मवेशी बाड़ों और पिंजरा पोलों का प्रबंधन	स्थानीय निकाय के सभी पशु बाड़ों और पिंजरापोलों का प्रबंधन स्थानीय निकाय द्वारा सोसायटी फॉर प्रवेशन ऑफ़ क्रुएल्टी टू एनिमल्स या पशु कल्याण संस्थाओं के साथ संयुक्त रूप से किया जाएगा।

पशुओं को प्रभावित करने वाले संक्रामक और संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण

स्थानीय निकायों अपने अधिकार क्षेत्र में पशुओं को प्रभावित करने वाली संक्रामक बीमारियों की रोकथाम, नियंत्रण और उन्मूलन के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य और पशु कल्याण की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तिका का यह खंड विभिन्न विधायी अधिनियमों के तहत स्थानीय निकायोंमेंनिहित विशिष्ट जिम्मेदारियों और शक्तियों को रेखांकित करता है। यह स्थानीय निकायों अधिकारियों को पशु स्वास्थ्य मुद्दों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, रोग नियंत्रण उपायों को लागू करने और पशु चिकित्सा अधिकारियों के साथ समन्वय करने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करता है। इन जिम्मेदारियों को समझकर और उन्हें पूरा करके, स्थानीय निकायों स्वस्थ पशु आबादी को बनाए रखने और मनुष्यों में पशुजन्य रोग के संचरण के जोखिम को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

पशुओं को प्रभावित करने वाली संक्रामक और संचारी बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
धारा 29(1)(ए) और (1)(बी)। पशुओं में संक्रामक और सांसर्गिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम, 2009	रोग नियंत्रण	स्थानीय निकाय नियमों के अनुसार रोग नियंत्रण उपायों को लागू करेंगे।	यह स्वामित्व वाले तथा निराश्रित/ स्वामित्वहीन पशु दोनों प्रकार के पशुओं पर लागू होता है।
धारा 29(2) और (3), पशुओं में संक्रामक और सांसर्गिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम, 2009	प्रवर्तन की लागत	निराश्रित/स्वामित्वहीन पशुओं के लिए प्रवर्तन कार्रवाई की लागत वहन करेंगे और असंतुष्ट मालिकों से लागत वसूल करेंगे।	

धारा 30, पशुओं में संक्रामक और सांसर्गिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम, 2009	रोग नियंत्रण में सहायता	स्थानीय निकाय रोग नियंत्रण प्रयासों में पशु चिकित्सा अधिकारियों की सहायता करेंगे।	संदिग्ध प्रकोप की रिपोर्ट करें। निवारक उपायों को लागू करें। प्रवर्तन में सहायता करना (संगरोध, शव निस्तारण, आवागमन प्रतिबंध)।
धारा 3(बी), पशुओं में संक्रामक और सांसर्गिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम, 2009		स्थानीय निकाय अनुसूचित बीमारी से पीड़ित निराश्रित/स्वामित्वहीन स्वामित्वहीन पशुओं को अलग रखेंगे।	
धारा 114 (xi), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	रोगों की रोकथाम	स्थानीय निकायों को संक्रामक, संक्रमणकारी और खतरनाक बीमारियों के प्रसार को रोकने और स्थिर के लिए उचित और पर्याप्त प्रावधान करना चाहिए।	इसमें मनुष्यों और पशुओं दोनों को प्रभावित करने वाली बीमारियाँ शामिल हैं।
धारा 114(xi), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	निगम के अनिवार्य कर्तव्य	स्थानीय निकायों संक्रामक, संक्रमणकारी और खतरनाक बीमारियों के प्रसार को रोकने और जांचने के लिए जिम्मेदार है।	
धारा 407, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	खतरनाक बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए स्थानों का निरीक्षण	स्थानीय निकाय किसी भी स्थान का किसी भी समय निरीक्षण कर सकते हैं, जहां किसी खतरनाक बीमारी की आशंका हो या मौजूद होने का संदेह हो, तथा उसके प्रसार को रोकने के लिए उपाय कर सकते हैं।	मुख्य नगर अधिकारी बिना सूचना दिए या युक्तियुक्त सूचना दिए जाने के बाद भी निरीक्षण कर सकते हैं।

धारा 411, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	खतरनाक बीमारी के प्रकोप के दौरान विशेष उपाय	यदि सामान्य प्रावधान अपर्याप्त हों तो शहरी स्थानीय निकाय, राज्य सरकार की मंजूरी से, खतरनाक बीमारियों के प्रकोप या प्रसार को रोकने के लिए विशेष उपाय कर सकते हैं तथा अस्थायी आदेश जारी कर सकते हैं।	मुख्य नगर अधिकारी को उठाए गए किसी भी कदम और दिए गए आदेशों की सूचना निगम को देनी होगी।
धारा 541(24), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	दुधारू पशुओं में संक्रामक रोग की सूचना के लिए उपनियम	स्थानीय निकाय ऐसे उपनियम बना सकते हैं, जिनमें दुधारू पशुओं के संक्रामक रोगों से प्रभावित होने पर सूचना देने की आवश्यकता होगी तथा दुधारू पशुओं और दूध को संक्रमण या संदूषण से बचाने के लिए सावधानियां बताई जाएंगी।	
धारा 541(25), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशु रोग प्रकोप के दौरान उपायों के लिए उपनियम	स्थानीय निकाय पशुओं में मनुष्यों के लिए संक्रामक रोगों के प्रकोप के दौरान किए जाने वाले उपायों को विनियमित करने तथा ऐसे उपायों को सुगम बनाने के लिए सूचना उपलब्ध कराने के लिए उपनियम बना सकते हैं।	
धारा 541(31), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	संक्रामक रोगों की सूचना के लिए उपनियम	स्थानीय निकाय विशिष्ट संक्रामक, महामारी या स्थानिक रोगों (जो खतरनाक रोग नहीं हैं) के मामलों की सूचना देने के लिए उपनियम बना सकते हैं, तथा प्रभावित व्यक्तियों या संक्रमण के संपर्क में आए लोगों के लिए सावधानियां निर्धारित कर सकते हैं।	
धारा 435, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	अस्वास्थ्यकर वस्तुओं का निरीक्षण और जब्ती	स्थानीय निकाय पशुओं का निरीक्षण कर सकते हैं, तथा उन्हें जब्त कर सकते हैं जो बीमार, अस्वस्थ, या मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त प्रतीत होते हैं।	ऐसे पशुओं को उनकी स्थिति के निर्धारण तथा आवश्यकता पड़ने पर संभावित विनाश के लिए प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट के समक्ष ले जाया जाएगा।

धारा 436, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	नाशवान जब्त वस्तुओं का निस्तारण	स्थानीय निकायों को जब्त की गई ऐसी खराब होने वाली वस्तुओं को नष्ट कर देना चाहिए जो रोगग्रस्त, अस्वस्थ, अस्वास्थ्यकर या मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त हों।	नष्ट करने का व्यय उस व्यक्ति द्वारा भुगतान किया जाएगा जिसके कब्जे में जब्ती के समय वस्तु थी।
धारा 490, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम , 1959	अस्वास्थ्यकर भोजन रखने पर जुर्माना	रोगग्रस्त, अस्वस्थ, अस्वास्थ्यकर या मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त समझे जाने वाले खाद्य पदार्थ के मालिकों या धारकों पर दोष सिद्ध होने पर पांच सौ रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।	यह तब लागू होता है जब भारतीय न्याय संहिता की धारा 273 लागू नहीं होती।

कराधान

नगर निगम के पास नगर निगम क्षेत्र में सवारी, ड्राइविंग, सूखे या भार ढोने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जानवरों पर कर लगाने का अधिकार है। यह कर पशु के मालिक या उस व्यक्ति पर लगाया जाता है जिसके पास पशु है। हालांकि, अगर किसी पशु का इस्तेमाल वाहन खींचने के लिए किया जाता है, तो कर वाहन के मालिक या नियंत्रक पर लगाया जाता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि नगर निगम के अपने पशुओं को इस कर से छूट दी गई है। कर का भुगतान न किए जाने पर निगम के पास पशुओं को जब्त करने और हिरासत में लेने का अधिकार है, और अगर दो दिनों के भीतर दावा नहीं किया जाता है, तो वह बकाया राशि वसूलने के लिए पशु को बेच सकता है। ऐसी बिक्री से होने वाला कोई भी अधिशेष निगम कोष में जमा किया जाता है, जिसमें मूल स्वामी के पास वापसी का दावा करने के लिए एक वर्ष का समय होता है।

कराधान

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
धारा 172(1)(सी) एवं 172(1)(ई), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं पर कर	स्थानीय निकायों को कर देना होगा: 1) सवारी, वाहन चलाने, भार ढोने या बोझा ढोने के लिए उपयोग किए जाने वाले पशु 2) नगरपालिका क्षेत्र में रखे जाने वाले श्वान।	
धारा 182(3), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	शहर की सीमा के बाहर रखे गए पशुओं पर कर	शहर की सीमा के भीतर नियमित रूप से उपयोग किए जाने वाले पशुओं को शहर के बाहर रखा जाता है, तथा उन्हें शहर में उपयोग के लिए रखा जाता है, तथा उन पर कर लगाया जाता है।	

धारा 183(2), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशु कर से छूट	पशुओं पर कर लागू नहीं: 1) निगम के स्वामित्व वाले 2) भारत संघ के अधीन (अपवादों के साथ) 3) किसी राज्य के अधीन तथा केवल सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाने वाले, न कि लाभ के लिए।	संघ/राज्य के पशुओं के लिए, यदि लाभ के उपयोग के बारे में विवाद उत्पन्न होता है, तो राज्य सरकार का निर्णय अंतिम होगा (धारा 183(3))
धारा 182(1), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं पर कर की दरें	कर राज्य सरकार द्वारा निर्धारित दरों से अधिक नहीं लगाए जाएंगे।	स्थानीय निकायों को राज्य सरकार द्वारा निर्धारित अधिकतम दरों का पालन करना होगा।
धारा 148, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	कर दरों और सीमाओं का निर्धारण	स्थानीय निकायों को पशु कर की दरें प्रतिवर्ष 15 फरवरी (ऋणी) या 15 मार्च (अन्य) तक निर्धारित करनी होंगी।	

सार्वजनिक स्वास्थ्य और उपद्रव नियंत्रण

उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959 सार्वजनिक स्वास्थ्य, उपद्रव नियंत्रण और जूनोटिक रोग नियंत्रण के संबंध में स्थानीय निकायों को कुछ जिम्मेदारियाँ सौंपता है। यह तालिका इन विशिष्ट जिम्मेदारियों को रेखांकित करती है,

सार्वजनिक स्वास्थ्य और उपद्रव नियंत्रण

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
धारा 396, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	मृत पशुओं का निस्तारण	स्थानीय निकायों को मृत पशुओं का उचित निस्तारण सुनिश्चित करना होगा। मृत पशुओं के प्रभारी लोगों को या तो उन्हें 24 घंटे के भीतर निर्धारित निस्तारण स्थल पर ले जाना होगा, या स्थानीय निकायों को सूचित करना होगा, जो निस्तारण की व्यवस्था करेगा। आयुक्त निस्तारण के लिए शुल्क ले सकता है।	सड़कों या खुले स्थानों पर मरने वाले पशुओं के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को घटना के 3 घंटे के भीतर शहरी स्थानीय निकाय के निकटतम कार्यालय को इसकी सूचना देनी होगी। यदि मृत्यु रात्रि में हुई हो तो इसकी सूचना सूर्योदय के तीन घंटे के भीतर दी जानी चाहिए।
धारा 295(3), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं को बांधने पर प्रतिबंध	सार्वजनिक सड़कों पर जानवरों को बांधना प्रतिबंधित है और यह अपराध है। स्थानीय निकायों से बंधे हुए पशुओं को हटाया जा सकेगा और ऐसे पशुओं को आवारा माना जाएगा।	
धारा 114 (xi), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	रोगों की रोकथाम	स्थानीय निकायों को संक्रामक, संक्रमणकारी और खतरनाक बीमारियों के प्रसार को रोकने और रोकने के लिए उचित और पर्याप्त प्रावधान करना चाहिए।	इसमें मनुष्यों और पशुओं दोनों को प्रभावित करने वाली बीमारियाँ शामिल हैं।

धारा 114 (xii), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	एंटी-रेबीज़ उपचार	स्थानीय निकायों को एंटी-रेबीज उपचार की सुविधा उपलब्ध करानी होगी।	जूनोटिक रोग का प्रबंधन
धारा 407, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	रोग की रोकथाम के लिए निरीक्षण	स्थानीय निकाय, नगर आयुक्त के माध्यम से किसी भी समय किसी भी स्थान का निरीक्षण कर सकते हैं, जहां किसी खतरनाक बीमारी की आशंका हो या वहां बीमारी होने का संदेह हो।	ऐसे निरीक्षणों के लिए कोई नोटिस या अल्प सूचना नहीं दी जा सकती।
धारा 407, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	रोग नियंत्रण उपाय	स्थानीय निकाय, नगर आयुक्त के माध्यम से, खतरनाक बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिए उचित समझे जाने वाले उपाय कर सकते हैं।	यह निरीक्षण के दौरान पाई गई बीमारियों पर लागू होता है।
411(1) उ.प्र. नगर निगम अधिनियम, 1959	प्रकोप के दौरान विशेष उपाय	स्थानीय निकायों, नगर आयुक्त के माध्यम से और राज्य सरकार की मंजूरी से, खतरनाक या संक्रामक रोगों के प्रकोप या खतरे के दौरान विशेष उपाय कर सकते हैं।	जब साधारण प्रावधान अपर्याप्त समझे जाएं तब लागू।
411(1)(ए) उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	विशेष उपायों का कार्यान्वयन	स्थानीय निकाय नगर आयुक्त द्वारा आवश्यक समझे जाने वाले विशेष उपायों को लागू करेंगे।	रोग के प्रकोप या खतरे के दौरान।
411 (1)(बी) उ0प्र0 नगर निगम अधिनियम, 1959	अस्थायी सार्वजनिक आदेश	स्थानीय निकायों को बीमारी के प्रकोप या खतरे के दौरान जनता द्वारा पालन किए जाने हेतु नगर आयुक्त द्वारा निर्धारित अस्थायी आदेशों को लागू करना होगा।	इन आदेशों को सार्वजनिक सूचना के माध्यम से प्रचारित किया जाना चाहिए।

541 (24) उ.प्र. नगर निगम अधिनियम, 1959	रोगग्रस्त दुधारू पशुओं के लिए उपनियम	स्थानीय निकाय ऐसे उपनियम बना सकते हैं जिनके तहत दुधारू पशुओं के संक्रामक रोगों से प्रभावित होने पर सूचना देना अनिवार्य होगा।	उपनियमों में दुधारू पशुओं और दूध को संक्रमण या संदूषण से बचाने के लिए सावधानियां भी बताई जानी चाहिए।
541 (25) उ.प्र. नगर निगम अधिनियम, 1959	जूनोटिक रोग प्रकोप के लिए उपनियम	स्थानीय निकाय मनुष्यों में फैलने वाले पशु रोगों के प्रकोप के दौरान किए जाने वाले उपायों को विनियमित करने वाले उप-नियम बना सकते हैं।	ऐसे उपायों को सुगम बनाने के लिए उपनियमों में सूचना की आपूर्ति को भी विनियमित किया जाना चाहिए।

डेयरी, भारवाहक पशु और मवेशी

यह तालिका डेयरियों, भारवाहक पशुओं और मवेशियों से संबंधित स्थानीय निकायोंकीजिम्मेदारियों को रेखांकित करती है। यह इन मामलों के संबंध में निगम के अनिवार्य और विवेकाधीन कार्यों का विवरण देती है।



डेयरी, काम करने वाले पशु और मवेशी

प्रावधान	विवरण	विशिष्ट	टिप्पणी
धारा 541, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	उपनियम बनाने की शक्ति	शहरी स्थानीय निकाय डेयरियों से संबंधित विभिन्न मामलों के नियंत्रण और विनियमन के लिए उप-नियम बना सकते हैं, जिनमें शामिल हैं: 1. धारा 541(21): दुधारू पशुओं के निरीक्षण और पशु शेड/डेयरी निर्माण को विनियमित करने के लिए उपनियम। 2. धारा 541(22): दूध के भंडारों, दुकानों और बर्तनों की साफ-सफाई अनिवार्य करने के लिए उपनियम। 3. दूध की बिक्री को विनियमित करने, संदूषण से सुरक्षा और संदूषित दूध की बिक्री की रोकथाम के लिए उपनियम। 4. दुधारू पशुओं में संक्रामक रोग की रिपोर्टिंग अनिवार्य करने तथा सावधानियां निर्धारित करने के लिए उपनियम। 5. धारा 114 (xxviii) के अनुसार निगम को पशु बाड़े के निर्माण और रखरखाव के लिए पर्याप्त प्रावधान करना आवश्यक है।	
धारा 115, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	विवेकाधीन शक्ति	स्थानीय निकायों को गौशालाएं स्थापित करने, उनका अधिग्रहण करने और रखरखाव करने का विवेकाधिकार है।	

धारा 114 (xxxiv-c), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	क्रूरता पर रोकथाम	स्थानीय निकाय सुधार योजनाओं में पशुपालन केन्द्र तथा पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण को शामिल कर सकता है।	
धारा 114 (xxviii), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 2000	अनिवार्य कर्तव्य	स्थानीय निकायों का यह दायित्व है कि वे पशु बाड़े के निर्माण और रखरखाव के लिए पर्याप्त प्रावधान करें।	
धारा 115, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	विवेकाधीन शक्तियां	स्थानीय निकायों को गौशालाएं स्थापित करने, उनका अधिग्रहण करने और रखरखाव करने का विवेकाधिकार है।	
धारा 295(3), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं को बांधने पर प्रतिबंध	सार्वजनिक सड़कों पर जानवरों को बांधना प्रतिबंधित है और यह अपराध है।	
धारा 434, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	डेयरी उत्पादों का निरीक्षण	स्थानीय निकायों को बिक्री के लिए या मानव उपभोग के लिए रखे गए डेयरी उत्पादों का नियमित निरीक्षण सुनिश्चित करना होगा।	
धारा 447, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959		डेयरी प्रयोजनों के लिए रखे गए या मानव उपभोग के लिए रखे गए पशुओं को कोई भी गंदा या हानिकारक पदार्थ खिलाने पर प्रतिबंध है।	
बिंदु 7, डेयरी फार्मों और गौशालाओं के पर्यावरण प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश		स्थानीय निकाय अपने अधिकार क्षेत्र में स्थित डेयरी इकाइयों और गौशालाओं की सूची तैयार करेंगे।	

		इस सूची को कैलेंडर वर्ष के आधार पर वार्षिक रूप से अद्यतन किया जाना चाहिए तथा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड/प्रदूषण नियंत्रण समिति (पीसीसी) के साथ साझा किया जाना चाहिए। स्थानीय निकायों को नगरपालिका कानूनों के अनुसार डेयरी इकाइयों और गौशालाओं के पंजीकरण के लिए समाचार पत्रों और अपनी वेबसाइट पर सार्वजनिक सूचना प्रकाशित करनी चाहिए और पंजीकृत प्रतिष्ठानों को उनकी वेबसाइट पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। स्थानीय निकायों को पर्यावरण संबंधी दिशा-निर्देश अपनी वेबसाइट पर अपलोड करने होंगे तथा उन्हें अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली सभी पंजीकृत डेयरी इकाइयों और गौशालाओं में भी प्रसारित करना होगा।	
धारा 400(बी), उ0प्र0 नगर निगम अधिनियम, 1959	जल प्रदूषण की रोकथाम	स्थानीय निकायों को जल निकायों के प्रदूषण को रोकना होगा।	
धारा 434, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	डेयरी उत्पाद निरीक्षण	स्थानीय निकायों को बिक्री या मानव उपभोग के लिए डेयरी उत्पादों का नियमित निरीक्षण सुनिश्चित करना चाहिए।	
धारा 440, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	डेयरी व्यवसाय लाइसेंसिंग	स्थानीय निकायों को लाइसेंसिंग के माध्यम से डेयरी व्यवसायों को विनियमित करना चाहिए।	

धारा 447, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशु आहार विनियमन	स्थानीय निकायों को डेयरी प्रयोजनों या मानव उपभोग के लिए रखे गए पशुओं को हानिकारक पदार्थ खिलाने से रोकना चाहिए।	
धारा 438(1)(सी) एवं 438(5), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	डेयरी पशु पालन विनियमन	स्थानीय निकायों को वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए डेयरी पशुओं को रखने का विनियमन करना चाहिए। स्थानीय निकायों को लाइसेंस देने या अस्वीकार करने तथा शर्तें लगाने का अधिकार है।	
धारा 560, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	परिसर निरीक्षण	स्थानीय निकायों को लाइसेंस प्राप्त डेयरी व्यवसायों सहित परिसरों का निरीक्षण करने का अधिकार है। विशेष परिस्थितियों में बलपूर्वक प्रवेश की अनुमति है।	
धारा 451(1), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	सामान्य लाइसेंसिंग प्राधिकरण	स्थानीय निकायों के पास विभिन्न उद्देश्यों के लिए लाइसेंस देने का अधिकार है। लाइसेंस में अवधि, प्रतिबंध, शर्तें और नवीनीकरण की समय-सीमाएँ निर्दिष्ट होती हैं।	
धारा 438, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए पशुपालन	स्थानीय निकायों को लाइसेंसिंग के माध्यम से परिवहन, किराये, बिक्री या संबंधित वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए पशुओं को रखने का विनियमन करना चाहिए।	लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक है।
धारा 451(2), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	लाइसेंस शुल्क सेटिंग	स्थानीय निकायों को लाइसेंसिंग के माध्यम से परिवहन, किराये, बिक्री या संबंधित वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए पशुओं को रखने का विनियमन करना चाहिए।	इसके लिए नगर आयुक्त जिम्मेदार हैं।

धारा 451(3), उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	लाइसेंस निरस्तीकरण या निलंबन	स्थानीय निकायों के पास उल्लंघन के लिए लाइसेंस रद्द करने या निलंबित करने की शक्ति है।	धोखाधड़ी, शर्तों के उल्लंघन या संबंधित अपराधों के मामलों में लागू होता है।
धारा 115, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	पशुओं के लिए विवेकाधीन सेवाएँ	स्थानीय निकाय विभिन्न पशु-संबंधी सेवाएं प्रदान कर सकते हैं, जिनमें जल-कुंड, चिकित्सालय, अस्पताल और स्वच्छता-स्थल शामिल हैं।	
धारा 396, उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959	मृत पशु हटाना	स्थानीय निकाय पशुओं के शवों को हटाने के लिए जिम्मेदार हैं।	मालिकों को 3 घंटे के भीतर रिपोर्ट करना होगा और हटाने का शुल्क देना होगा।
नियम 2(डी), 6, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (फेरियर्स का लाइसेंसिंग) नियम, 1965	लाइसेंसिंग प्राधिकरण की शक्तियां और लाइसेंस जारी करना	स्थानीय निकाय (जब राज्य सरकार द्वारा लाइसेंसिंग प्राधिकारी के रूप में नामित किया गया हो) निम्नलिखित कार्य करेंगे: आवेदक की फिटनेस और योग्यता का सत्यापन करने तथा उसके व्यवसाय के संचालन के लिए उचित उपकरण की उपलब्धता सुनिश्चित करने के बाद, फ़ेरियर लाइसेंस की प्रक्रिया और उसे प्रदान करना।	सत्यापित किये जाने वाले उपकरणों में शामिल हैं: Driving hammer with claws Hand hammer Drawing knife Scorcher Knife Pincers Buffer Rasp Chisel for cutting bar iron Punch for making nail holes Nails for shoeing Twitch Wooden plank for finishing work Iron anvil Good quality wrought iron for shoes लाइसेंस के लिए निर्धारित प्रपत्र हेतु **अनुलग्नक-सी** देखें

नियम 7, 8, 12, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (फेरियर्स का लाइसेंसिंग) नियम, 1965	लाइसेंस प्रशासन	स्थानीय निकाय (जब राज्य सरकार द्वारा लाइसेंसिंग प्राधिकारी के रूप में नामित किया गया हो) निम्नलिखित कार्य करेंगे: 2 वर्ष के लिए वैध लाइसेंस जारी करना लाइसेंस नवीनीकृत करें प्रासंगिक जांच करने के बाद, लाइसेंस के खराब हो जाने, खो जाने या नष्ट हो जाने पर उसकी प्रतिलिपि जारी करें निर्धारित शुल्क जमा करें	नवीनीकरण के लिए आवेदन में इच्छित अवधि का उल्लेख करना आवश्यक है। नवीनीकरण अवधि एक बार में अधिकतम 2 वर्ष है।
नियम 10, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (फ़ारियरों का लाइसेंस) नियम, 1965	निरीक्षण और प्रवर्तन	स्थानीय निकायों (जब राज्य सरकार द्वारा लाइसेंसिंग प्राधिकारी के रूप में नामित किया जाता है) को निम्नलिखित का अधिकार है: सामान्य कार्य समय के दौरान व्यवसाय स्थल में प्रवेश करें और निरीक्षण करें। लाइसेंस रद्द करें: खराब गुणवत्ता वाले काम, अपर्याप्त उपकरण, नियम उल्लंघन।	रद्द करने से पहले सुनवाई का उचित अवसर दिया जाना चाहिए। निरस्तीकरण के विरुद्ध अपील राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष दायर की जा सकती है।
नियम 13, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (फ़ारियरों का लाइसेंस) नियम, 1965	रिकॉर्ड रखना	स्थानीय निकाय (जब राज्य सरकार द्वारा लाइसेंसिंग प्राधिकारी के रूप में नामित किया गया हो) निम्नलिखित कार्य करेंगे: सभी लाइसेंसों का व्यापक रजिस्टर बनाए रखें।	

नुग्गेहल्ली जयसिम्हा बनाम एनसीटी दिल्ली सरकार में माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण का दिनांक 02.09.2023 का आदेश [ओ.ए. संख्या 46/2018]: माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने डेयरी फार्मों और गौशालाओं के पर्यावरण प्रबंधन के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रस्तावित दिशा-निर्देशों को स्वीकार किया और उनके क्रियान्वयन को अनिवार्य बनाया। आदेश में स्थानीय अधिकारियों को ऐसी डेरी इकाइयों की सूची बनाए रखने का निर्देश दिया गया है, संचालन के लिए पर्यावरण कानूनों के तहत प्रदुषण नियंत्रण बोर्ड/समिति से सहमति प्राप्त करने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के लिए विशिष्ट दिशा-निर्देशों का पालन करना अनिवार्य है। अधिकरण ने शहरी क्षेत्रों में डेयरी फार्मों और गौशालाओं के पर्यावरण प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए इन दिशा-निर्देशों को लागू करने में स्थानीय निकायों की भूमिका पर जोर दिया।



रेबीज़ उन्मूलन

भारत से 2030 तक श्वानों से होने वाले रेबीज के उन्मूलन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीआरई) एक व्यापक कार्यक्रम है जिसका लक्ष्य भारत में श्वानों द्वारा प्रसारित रेबीज को समाप्त करना है। यह रणनीतिक कार्यक्रम श्वानों के सामूहिक टीकाकरण (एमडीवी) अभियानों को प्राथमिकता देता है, जो झुंड प्रतिरक्षा प्राप्त करने और अंततः श्वानों द्वारा प्रसारित रेबीज के संक्रमण को समाप्त करने के लिए एक आधारशिला है। एनएपीआरई का लक्ष्य लगातार तीन वर्षों तक श्वानों की आबादी में कम से कम 70% एंटी-रेबीज टीकाकरण कवरेज सुनिश्चित करना है। यह लक्षित दृष्टिकोण प्रभावी रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करेगा और 2030 तक रेबीज मुक्त भारत में योगदान देगा।



श्वानों से होने वाले रेबीज के उन्मूलन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना

विवरण	विशिष्ट
सहयोग	स्थानीय निकाय एमडीवी अभियानों की योजना बनाने और क्रियान्वयन में एएचडी के साथ सहयोग करेंगे।
अनुदान	स्थानीय निकाय एमडीवी कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए धन आवंटित कर सकते हैं। इसमें टीके, कार्मिक, रसद, आउटरीच गतिविधियों और डेटा संग्रह के लिए धन शामिल है।
जन जागरूकता अभियान	स्थानीय निकायों को श्वानों के टीकाकरण और जिम्मेदार पालतू स्वामित्व पर जन जागरूकता अभियान चलाना होगा।
जिला स्तरीय संचालन समिति (डीएलएससी)	जिला स्तर पर रेबीज उन्मूलन कार्य योजना के कार्यान्वयन की देखरेख के लिए जिला स्तर पर गठित इस समिति के सदस्य स्थानीय निकाय हैं।

अनुलग्नक-ए-

परियोजना मान्यता के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाला फॉर्म।

अनुसूची – I

[नियम 6 (3) देखें]

1. प्ररूप।

पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम की अनुमति लेने के लिए आवेदन पत्र

भाग - I

1.	संगठन का ब्यौरा						
(क)	संगठन का नाम						
(ख)	संगठन का पता पिन कोड नं. सहित						
(ग)	टेलीफोन नंबर एसटीडी कोड के साथ और मोबाइल नंबर (व्हाट्सएप नंबर)						
(घ)	ई-मेल पता						
(ङ)	संगठन का पैन नंबर						
(च)	स्थापना का वर्ष						
2.	शरण गृह / औषधालय का ब्यौरा						
	क्र. सं.	शरणगृह / औषधालय का पता	शरणगृह की संख्या	शरणगृह का क्षेत्रफल	छोटे पशुओं की संख्या	बडे पशुओं की संख्या	प्रकार (शरणगृह / औषधालय)
	1.						
	2.						
3.	पदाधिकारियों / शासी निकाय / प्रबंधन समिति के ब्यौरे						
	नाम	पद का नाम	पता	फोन नंबर / मोबाइल नंबर (व्हाट्सएप नंबर)		ई-मेल पता	आधार नंबर

	1.					
	2.					
	3.					
4.	सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम / भारतीय न्यास अधिनियम, सहकारी सोसाइटी अधिनियम, आदि के अधीन वर्ष के साथ रजिस्ट्रीकरण संख्या (रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करें नवीकरण के साथ, यदि कोई हो, सम्यक रूप से नोटरी पब्लिक द्वारा सत्यापित)					
5.	नीति आयोग एनजीओ पोर्टल पर रजिस्ट्रीकरण का ब्यौरा-तारीख और विशिष्ट आईडी नंबर (एक फोटोकॉपी संलग्न करें) (अनिवार्य)					
6.	संगम ज्ञापन, उपनियम / संगठन का संविधान (कृपया नोटरी पब्लिक द्वारा सम्यक रूप सेप्रमाणित संशोधन के साथ एमओए की प्रति संलग्न करें, यदि कोई हो					
7.	विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का ब्यौरा– रजिस्ट्रीकरण की संख्या और तिथि (कृपया रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र की प्रति संलग्न करें)					
8.	आयकर अधिनियम के अधीन 80छ छूट का ब्यौरा, यदि कोई हो (संख्या, तारीख और संलग्नक)					
9.	आय के स्रोत का ब्यौरा (राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार, विदेशी एजेंसियों और अन्य स्रोत से प्राप्त अनुदान)					
	राज्य सरकार से					
	केन्द्रीय सरकार से (एडब्ल्यूबीआई के अतिरिक्त)					
	दान से					
	विदेशी एजेंसियों से					
	अन्य स्रोतों से					
	कुल					
10(i)	संस्था के मुख्य उद्देश्य					
10 (ii)				**गतिविधियां**	**व्यय का प्रतिशत**	
				आवारा पशुओं / बडे पशुओं को आश्रय देना		

	पिछले तीन वर्षों के दौरान किए गए व्यय के प्रतिशत के साथ संगठन की गतिविधियां	आवारा कुत्तों और अन्य छोटे पशुओं को आश्रय देना	
		पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम	
		औषधालय / उपचार	
		पशु रोगी वाहन सेवाएं / मोबाइल पशु क्लिनिक	
		पशुओं का बचाव / पुनर्वास	
		पशु कल्याण के लिए जागरूकता / प्रशिक्षण	
		पशुओं के प्रति क्रूरता के खिलाफ कानूनी मामले दर्ज	

10(iii)	लक्ष्य और उद्देश्यों के अनुसार अन्य गतिविधियाँ		
	क्र. सं.	**गतिविधियां**	**व्यय का प्रतिशत**
	1.		
	2.		

11.	वर्ष के दौरान आश्रय / इलाज / बचाए गए पशुओं की संख्या का ब्यौरे	
(i)	वर्ष के दौरान बचाए गए पशुओं की संख्या	
(ii)	पिछले एक वर्ष में संगठन द्वारा उपचारित पशुओं की संख्या **टिप्पण:** (*जैसा कि संगठन द्वारा बनाए गए पशु उपचार रजिस्टर से सत्यापित है*)	

	उनके इन-हाउस डिस्पेंसरी / अस्पताल में	मौके पर बीमार और घायल जानवर	चिकित्सा शिवरों में	मोबाइल क्लीनिक द्वारा	**कुल**

(iii)	आश्रय वाले पशु की सामान्य स्वास्थ्य स्थिति (संबंधित दस्तावेज संलग्न करें)	
(iv)	अधिकार क्षेत्र के पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा पशु सत्यापन प्रमाण-पत्र (प्रमाण-पत्र की फोटो कॉपी संलग्न करें)	

12.	उपलब्ध औषधालय / चिकित्सा सुविधाओं का विवरण			
	औषधालय / स्वास्थ्य सुविधा का पता	ओटी (उपलब्ध या नहीं)	चिकित्सकीय संसाधन	ब्यौरा संलग्न किया जाना है

13.	क्या रोगी वाहन / ट्रैक्टर ट्रॉली उपलब्ध है, यदि हाँ						
	क्र.सं.	**वाहन का मॉडल**	**खरीदने की तारीख**	**कि.मी.**	**खरीद की लागत**	**उपयोग का प्रयोजन**	**लॉग बुक**

	1.						
	2.						
14.	क्या संगठन किसी मुकदमे में शामिल है ? यदि हां तो नवीनतम स्थिति सहित उसका विवरण और इसने संगठन के कामकाज को कैसे प्रभावित किया है ?						
15.	संस्था / शरणगृह में कर्मचारियों का विवरण						
	कर्मचारी का नाम	**आयु**	**आधार नंबर**	**वेतन**	**शिक्षा**	**पद का नाम**	**प्रकार (पूर्णकालिक / अंशकालिक)**
16.	पिछले वर्ष के दौरान पीसीए अधिनियम के अधीनसंस्थित अदालती मामलों की संख्या						
17.	पिछले वर्ष के दौरान पीसीए अधिनियम के अधीनफाइल की गई प्राथमिकी (एफ.आई.आर.) की संख्या						
18.	प्रबंधन समिति की बैठकों की आवधिकता (पिछले एक वर्ष की पशु कल्याण गतिविधियों के लिए अपनाए गए संकल्प की प्रतियां संलग्न करें)						
19.	पिछले तीन वर्षों की गतिविधि रिपोर्ट / वार्षिक रिपोर्ट की प्रति, यदि कोई हो						
20.	तुलनपत्र और आय-व्यय विवरण सहित वार्षिक लेखा परीक्षित खातों की प्रति, यदि कोई हो						
21.	संगठन के नाम पर बैंक खाते के ब्यौरा						
	बैंक का नाम	शाखा का पता	आईएफएस कोड	खाता संख्या	खाता धारक का नाम		

भाग – II

22.	पशु जन्म नियंत्रण केंद्र (केंद्रों) का विवरण		
	केंद्र का नाम	**केंद्र का पता**	
23.	चालू वर्ष में प्रस्तावित बंध्यीकृत या लक्षित और प्रतिरक्षित किए जाने वाले पशुओं की कुल संख्या		
(i)	**नर कुत्ता**	**मादा कुत्ता**	**कुल**
(ii)	इस प्रयोजन के लिए किया जाने वाला कुल व्यय		

24.	इसी प्रयोजन के लिए किसी अन्य एजेंसी / सरकार / विभाग से प्राप्त सहायता अनुदान / प्रतिपूर्ति अनुदान का विवरण, यदि कोई हो			
	क्र. सं.	**रकम**	**कहां से प्राप्त**	**वर्ष**

25.	पिछले **5** वर्षों में किए गए पशु जन्म नियंत्रण शल्य चिकित्सा कार्यों का विवरण (वर्ष - वार ब्यौरा)				
	क्र. सं.	**नर कुत्ता**	**मादा कुत्ता**	**कुल**	**वर्ष**

26.	प्रस्तावित योजना को क्रियान्वित करने के लिए संगठन के पास उपलब्ध अवसंरचना / सुविधाओं का विवरण	
(क)	क्या आपके पास शल्यक्रिया कक्ष के साथ एक डिस्पेंसरी है?	☐ हां ☐ नहीं
(ख)	उपलब्ध भापसह पात्रों की संख्या	
(ग)	क्या शीत और उपस्कर के लिए भंडार कक्ष उपलब्ध है ?	☐ हां ☐ नहीं
(घ)	कुत्तों को पकडने का तरीका	
(ङ)	क्या आपके पास स्वयं के कुत्ते पकडने वाले हैं, यदि नहीं तो उस एजेंसी का नाम जो कुत्तों को पकडेगी और रिहा करेगी	
(च)	प्रशिक्षित पशु संचालकों की संख्या	
(छ)	पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम चलाने की मासिक क्षमता	
(ज)	केनलों की संख्या एवं उनका माप / सुविधाओं के ब्यौरा	
	केनल की संख्या	
	क्षेत्र	
(झ)	ऑपरेशन थियेटर और अन्य बुनियादी ढाँचे का ब्यौरा	
	(अ) पूर्व-संचालन तैयारी क्षेत्र	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(आ) ओ.टी. में वातानुकूलन	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(इ) बंधीकृत कुत्तों की पहचान करने की विधि (जैसे कान का कतरना)	
	(ई) जल निकास	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(उ) उपकरणों की सफाई और बंधीकरण करने के लिए कमरा / क्षेत्र	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(ऊ) उपलब्ध सर्जिकल उपस्करों के सेट की संख्या	
	(ए) बुनियादी उपस्करों की संख्या	
	दगाई मशीन	
	ओ.टी. टेबल	

	स्ट्रेचर		
	ऑटोक्लेव		
	फ्रिज		
27.	क्या नगर पालिका / नगर निगम / प.क.सं. के साथ समझौता ज्ञापन किया गया है ? (यदि हां, तो समझौता ज्ञापन की प्रति संलग्न करें)		हां ☐ नहीं ☐
28.	क्या वर्ष के दौरान आपके क्षेत्र में कुत्तों की जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया है यदि हां, तो रिपोर्ट संलग्न करें		हां ☐ नहीं ☐
29.	इस परियोजना में अन्य सहयोगी प.क.सं. का विवरण ?		
	क्र.सं.	**प.क.सं. का नाम और पता**	
30.	निगरानी समिति का विवरण		
	क्र.सं.	**समिति के सदस्यों के नाम और पता**	
31.	अन्य जानकारी, यदि कोई हो		

घोषणा

मैं सत्यनिष्ठा से पुष्टि और घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा प्रदान की गई उपरोक्त जानकारी और दस्तावेज मेरे सर्वोतम ज्ञान और विश्वास के अनुसर सत्य और सही हैं और प्ररूप में कोई तथ्य छुपाया नहीं गया है

हस्ताक्षर और मुहर (अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता)

संगठन के शासी निकाय के लिए और उसकी ओर से

नाम :

पदासिहित :

टिप्पण

दस्तावेज क्षेत्रीय भाषा में हैं, जमा करने के समय उनका हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करें।

3. प्ररूप–II

परियोजना मान्यता का प्रमाण पत्र

4.प्ररूप–IV

प्ररूप–I के भाग –II के अनुसार परियोजना मान्यता का नवीनीकरण

5. प्ररूप–V

परियोजना मान्यता प्रमाण-पत्र का नवीनीकरण

अनुलग्नक-बी-

परियोजना नवीकरण के लिए AWBI को प्रस्तुत किए जाने वाला फॉर्म।

भाग – II

22.	पशु जन्म नियंत्रण केंद्र (केंद्रों) का विवरण				
	केंद्र का नाम		**केंद्र का पता**		
23.	चालू वर्ष में प्रस्तावित बंध्यीकृत या लक्षित और प्रतिरक्षित किए जाने वाले पशुओं की कुल संख्या				
(i)	**नर कुत्ता**	**मादा कुत्ता**	**कुल**		
(ii)	इस प्रयोजन के लिए किया जाने वाला कुल व्यय				
24.	इसी प्रयोजन के लिए किसी अन्य एजेंसी / सरकार / विभाग से प्राप्त सहायता अनुदान / प्रतिपूर्ति अनुदान का विवरण, यदि कोई हो				
	क्र. सं.	**रकम**	**कहां से प्राप्त**	**वर्ष**	
25.	पिछले **5** वर्षों में किए गए पशु जन्म नियंत्रण शल्य चिकित्सा कार्यों का विवरण (वर्ष - वार ब्यौरा)				
	क्र. सं.	**नर कुत्ता**	**मादा कुत्ता**	**कुल**	**वर्ष**
26.	प्रस्तावित योजना को क्रियान्वित करने के लिए संगठन के पास उपलब्ध अवसंरचना / सुविधाओं का विवरण				
(क)	क्या आपके पास शल्यक्रिया कक्ष के साथ एक डिस्पेंसरी है?		☐ हां ☐ नहीं		
(ख)	उपलब्ध भापसह पात्रों की संख्या				
(ग)	क्या शीत और उपस्कर के लिए भंडार कक्ष उपलब्ध है ?		☐ हां ☐ नहीं		
(घ)	कुत्तों को पकडने का तरीका				
(ङ)	क्या आपके पास स्वयं के कुत्ते पकडने वाले हैं, यदि नहीं तो उस एजेंसी का नाम जो कुत्तों को पकडेगी और रिहा करेगी				
(च)	प्रशिक्षित पशु संचालकों की संख्या				
(छ)	पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम चलाने की मासिक क्षमता				
(ज)	केनलों की संख्या एवं उनका माप / सुविधाओं के ब्यौरा				
	केनल की संख्या				
	क्षेत्र				

(झ)	ऑपरेशन थियेटर और अन्य बुनियादी ढाँचे का ब्यौरा	
	(अ) पूर्व-संचालन तैयारी क्षेत्र	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(आ) ओ.टी. में वातानुकूलन	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(इ) बंधीकृत कुत्तों की पहचान करने की विधि (जैसे कान का कतरना)	
	(ई) जल निकास	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(उ) उपकरणों की सफाई और बंधीकरण करने के लिए कमरा / क्षेत्र	☐ उपलब्ध ☐ उपलब्ध नहीं
	(ऊ) उपलब्ध सर्जिकल उपस्करों के सेट की संख्या	
	(ए) बुनियादी उपस्करों की संख्या	
	दगाई मशीन	
	ओ.टी. टेबल	
	स्ट्रेचर	
	ऑटोक्लेव	
	फ्रिज	
27.	क्या नगर पालिका / नगर निगम / प.क.सं. के साथ समझौता ज्ञापन किया गया है ? (यदि हां, तो समझौता ज्ञापन की प्रति संलग्न करें)	हां ☐ नहीं ☐
28.	क्या वर्ष के दौरान आपके क्षेत्र में कुत्तों की जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया है यदि हां, तो रिपोर्ट संलग्न करें	हां ☐ नहीं ☐
29.	इस परियोजना में अन्य सहयोगी प.क.सं. का विवरण ?	
	क्र.सं.	**प.क.सं. का नाम और पता**
30.	निगरानी समिति का विवरण	
	क्र.सं.	**समिति के सदस्यों के नाम और पता**
31.	अन्य जानकारी, यदि कोई हो	

घोषणा

मैं सत्यनिष्ठा से पुष्टि और घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा प्रदान की गई उपरोक्त जानकारी और दस्तावेज मेरे सर्वोतम ज्ञान और विश्वास के अनुसर सत्य और सही हैं और प्ररूप में कोई तथ्य छुपाया नहीं गया है

हस्ताक्षर और मुहर (अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता)

संगठन के शासी निकाय के लिए और उसकी ओर से

नाम :

पदासिहित :

टिप्पण

दस्तावेज क्षेत्रीय भाषा में हैं. जमा करने के समय उनका हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करें।

अनुलग्नक-सी -

लाइसेंस के लिए निर्धारित प्रपत्र।

नाल ठोंकने वाले का अनुज्ञप्ति पत्र

अनुज्ञप्तिपत्र क्रमांक .....

1. अनुज्ञप्तिधारक का नाम
2. निवास स्थान और डाक का पूरा पता
3. धंधे का स्थान
4. अनुज्ञप्ति की अवधि
   (दिनांक ..... से दिनांक ..... तक)

अनुज्ञप्ति की शर्तें

(1) यह अनुज्ञप्ति–पत्र, जारी होने के दो वर्ष की अवधि तक प्रभावी होगा। मूल या पूर्व अनुज्ञप्ति की अवधि पूरी होन के एक माह पूर्व, पशु–क्रूरता निवारण (नाल ठोंकने की अनुज्ञप्ति) नियम, 1965 के नियम 7 के अनुसार आवेदनपत्र नवीनीकरण हेतु देता होगा।

(2) अनुज्ञप्ति–पत्र की निरन्तरता अवधि में अनुज्ञप्तिधारक, सामान्यधंधे के घंटो में, अपने धंधे के स्थान पर नाल ठोंकने संबंधी आवश्यक औजार और अन्य साधन अनुज्ञप्ति–प्राधिकारी के निरीक्षण के समय मांगने पर दिखाने हेतु बाध्य होगा।

(3) अनुज्ञप्तिधारी का दायित्व होगा कि वह अनुज्ञप्ति प्राधिकारी द्वारा धंधे के स्थान के निरीक्षण हेतु सारी समुचित सुविधाएं उपलब्ध करेगा जिससे वह प्राधिकारी धंधे के स्थान और धेधे के तौर–तरीके के बारे में समुचित जानकारी प्राप्त कर सके।

नवीनीकरण नोंद

नवीनीकरण तिथि	पूरा होने की तिथि	अनुज्ञप्ति–प्राधिकारी के हस्ताक्षर	टिप्पणी
1	2	3	4

(भारत गजट विभाग 3 उपविभाग में अधिसूचित भारत सरकार, खाद्यान्न एवं कृषि क्रमांक 9–18/62 एल.डी.दिनांक 13.3.1965. नाल ठोंकने वाले की अनुज्ञप्ति (संशोधन) नियम, 1965 द्वारा प्रस्थापित)



उत्तर प्रदेश शासन